॥ ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः॥

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

वर्ष : 12 अंक : 134 जोधपुर : हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जुलाई– 2019 30/–प्रति

गुरु?

"जो गोविन्द से मिलाय।"

www.the-comforter.org

गुरु पूर्णिमा महोत्सव

16 जुलाई 2019 को सुबह 10.30 बजे जोधपुर आश्रम में मनाया जायेगा।

File Photo

क्या एक निर्जीव चित्र सजीव पर प्रभाव डाल सकता है ?

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या?

सद्गुरुदेव सियाग की दिव्य वाणी में संजीवनी मंत्र सुनकर इनके चित्र पर ध्यान करके देखें। (अपने घर बैठे ही)

मंत्र दीक्षा के लिये डायल करें - 07533006009

जोधपुर आश्रम - महाप्रयाण दिवस पर गुरुदेव की पूजा-अर्चना के बाद सामूहिक ध्यान किया गया। (5 जून 2019)

शनिश्चर थान, जोधपुर में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक ध्यान किया गया। (21 जून 2019)

जोधपुर - केन्द्रीय विद्यालय नं.1 में सिद्धयोग शिविर का आयोजन। (19 जून 2019)

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्ति, पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्य, मोक्ष मूलं गुरोः कृपा ।।

www.the-comforter.org

साधकों द्वारा गुजरात के थराद, धानेरा व जालोर जिले के सांचौर क्षेत्र के विद्यालयों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (जून 2019)

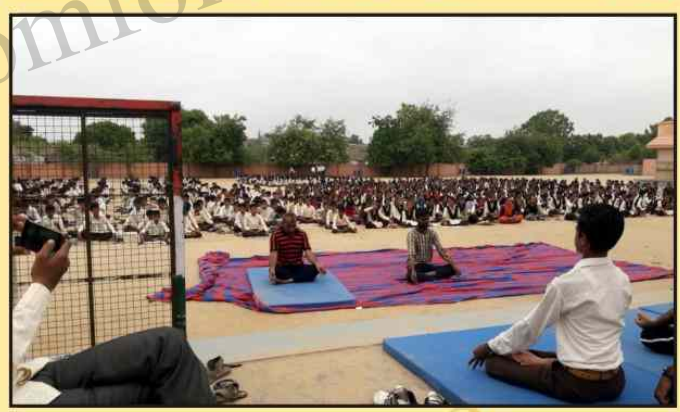

''ॐ श्री गंगाई नाथाय नमः''

स्पिरिचुअल साइंस

Spiritual Science

गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर द्वारा प्रकाशित

बाबा श्री गंगाईनाथजी योगी (ब्रह्मलीन)

वर्ष : 12 अंक : 134 जोधपुरः- हिन्दी, अंग्रेजी व गुजराती मासिक पत्रिका जुलाई – 2019

वार्षिक 300/- द्विवार्षिक : 600/- आजीवन (11 वर्ष) : 3000/- मूल्य 30/-

संस्थापक एवं संरक्षक :
पूज्य सद्गुरुदेव
श्री रामलालजी सियाग

सम्पादक :
रामूराम चौधरी

कार्यालय :
Spiritual Science
पत्रिका
अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र
पो.बॉक्स नं.41,
होटल लेरिया के पास,
चौपासनी, जोधपुर (राज.) भारत
9784742595
E-mail :
spiritualscienceavsk@gmail.com

Ashram :
Adhyatma Vigyan Satsang Kendra
Near Hotel Leriya,
Chopasani, JODHPUR (Raj.)
INDIA - 342 003
☎ +91 0291-2753699
Mob. : +91 9784742595
e-mail :
avsk@the-comforter.org
Website :
www.the-comforter.org

अनुक्रम

गुरु महिमा.....6
भारत का उत्थान और पतन (सम्पादकीय).....7
मेरी तस्वीर नहीं मरेगी, जब तक ये दुनिया रहेगी.....8
गुरु क्या है?.....9–10
Beginning of my Spiritual Life.....11
तीर्थधाम–सद्गुरुदेव का आश्रम.....12
योग के आधार.....13
योगियों की आत्मकथा.....14
आध्यात्मिक सत्संग?.....15
अनुभूतियाँ तथा रोगों व नशों से मुक्ति.....16–18
चित्र पृष्ठ.....19–22
समाचारों की सुर्खियों में सिद्धयोग दर्शन.....23
सच्चा विश्वास (कहानी).....24–25
मनुष्य और विकास.....26
सद्गुरु कृपा से क्षणभर में परिवर्तन.....27
भगवान् की अवतरण–प्रणाली.....28
ज्ञान का लक्ष्य.....29
योग के बारे में.....30
सद्गुरुदेव का प्रवचन.....31
मेरे गुरुदेव.....32
मेरे लिए तो 'गुरु' ही सर्वोपरि है.....33
सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से.....34
शेष पृष्ठ सम्पादकीय.....35
ध्यान विधि.....36

www.the-comforter.org

''गुरु महिमा''

गुरु ?-''जो गोविन्द से मिलाय।''

-सद्गुरुदेव सियाग

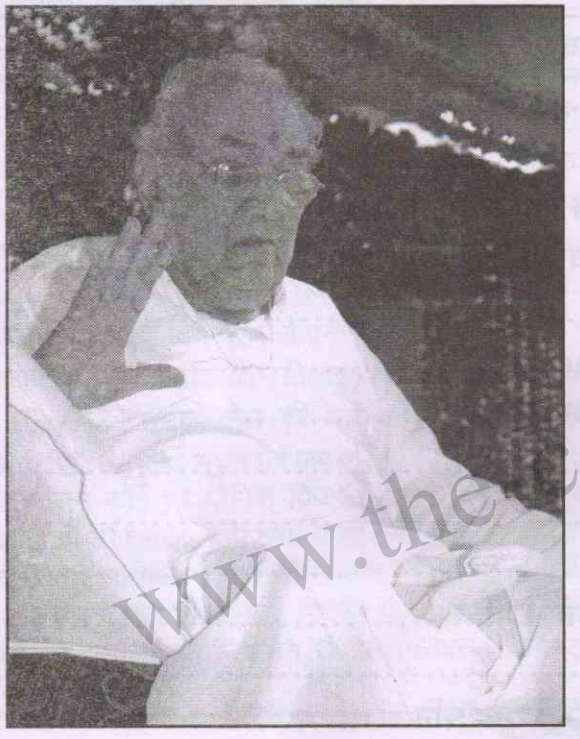

'गु' कहते अज्ञान को,
अर 'रु' का अर्थ है नाश।
नाश करे अज्ञान का,
वह है गुरु प्रकाश।।

प्रथमे प्रणऊँ गुरु के पाया।
जिन मोहि आत्मब्रह्म लखाया।।
सत्गुरु सबद कह्या ते बूझ्या।
तृहूं लोक दीपक मनिसूझ्या।।

-गोरखबानी प्राणसंकली-1

तीन लोक नव खण्ड में,
गुरु ते बड़ा न कोइ।
करता करै न करि सकै,
गुरु करै सो होइ।।

-कबीर साखी संग्रह

गुरु करता गुरु करणै जोगु। गुरु परमेसुर है भी होगु।।
कहू नानक प्रभि इहै जनाई। बिनू गुरु मुक्ति न पाइअै भाई।।

-महला-5 (शब्द 3) नानक

हमारे विज्ञान में Time (समय) and Space (जगह) की कोई Value (मूल्य) नहीं है। आप मेरे में हो और मैं आप में हूँ। आप जहाँ याद करोगे, मैं वहाँ Present (उपस्थित) रहूँगा। 'गुरु', अगर वास्तव में 'गुरु' है तो Omnipresent (सर्वव्यापक) है।

- समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

भारत का उत्थान और पतन

गुरु पूर्णिमा महोत्सव 16 जुलाई 2019 को जोधपुर मुख्यालय सहित संस्था की शाखाओं पर श्रद्धा भाव से मनाया जाएगा। इस पावन पर्व पर समस्त पाठकवृन्द को हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस अंक में भारत के उत्थान व पतन विषय को चुना गया है जो पाठकों की जानकारी में ज्ञानवृद्धक होगा।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति में अनेक उतार-चढ़ाव आए है। अनेक संकटों और भंयकर विद्रोही तुफानों का सामना करना पड़ा है। हमारी सभ्यता और संस्कृति का पूरे विश्व में डंका बजता था। जिसने भी अमर ज्ञान पाया, यहीं से पाया। हमारे वेद और उपनिषद इसके अमर साक्षी हैं। लेकिन भारत को कई बार पतन के काल से गुजरना पड़ा। वर्तमान में भारत पतन के काल से गुजर रहा है। भारत पर विदेशी आक्रमण हुए, धर्म और दर्शन लुप्तता के कगार पर थे। अनेक विकार पैदा हुए। फिर भी आज तक भारत (सनातन धर्म) अजर-अमर हैं। उसका मूल सुरक्षित है, तभी तो इकबाल ने कहा है:-

यूनानो मिस्रो रोमा, सब मिट गये जहां से,
अब तक मगर है बाकि नामो निशां हमारा।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन, दौरे जहां हमारा।।

भारतीय संस्कृति ने बहुतेरे तुफानों को झेला। उस पर ज्वालामुखी फटे है, बगुले पर बगुले, आये हैं। बहुत बार ऐसा लगा कि बस, अब इसका अंत आ गया, परन्तु वह फिर से एक नया जन्म लेकर खड़ी हो गई। इस संस्कृति का बिरवा वेदों से निकला था। वेदों ने ही संस्कृति के आदि काल में मनुष्य को भावी उपलब्धियों की एक झांकी दी थी और हर ''नूतन-सूर्योदय'' का ''नूतन-जीवन'' के रूप में स्वागत करना सिखाया था। श्री अरविंद कहते थे कि वेदों का अंत:प्रकाश उन ऋषियों को प्राप्त हुआ था जो ''योग'' में निष्णात थे, जिन्हें अंतदृष्टि प्राप्त थी, जिनकी विशुद्ध प्रज्ञा में शब्द का स्वामी अपने शब्द उडेलता था। और यह आदि-अनादि ज्ञान अनगिनत पीढियों से सुरक्षित है।

स्वामी श्री विवेकानंद जी ने अमेरिका में भाषण देते हुए **'भारत के ''उत्थान''** और **''पतन''** विषय का जीवंत चित्रण प्रस्तुत किया -जिसको पूज्य गुरुदेव ने विशेष महत्त्व दिया तथा अपने कर कमलों से लिखकर दिया-

''प्रत्येक पतन के बाद हिन्दू-धर्म भी श्री भगवान् के करूणापूर्ण नियंत्रण में निरोग होकर पूर्वापेक्षा अधिक यशस्वी और वीर्यवान हुआ है-इतिहास इस बात का साक्षी है। प्रत्येक पतन के बाद पुनरुत्थित-समाज अन्तर्निहित सनातन पूर्णत्व की ओर भी प्रकाशित करना है; और सर्वभूतों में अवस्थित अंतर्यामी प्रभु भी अपने स्वरूप को प्रत्येक अवतार में अधिकाधिक अभिव्यक्त करते हैं।

बार-बार यह भारत-भूमि मूर्च्छापन्न अर्थात् धर्म लुप्त हुई है, और बारम्बार भारत में भगवान् ने अपने आविर्भाव द्वारा इसे पुनरूज्जीवित किया है।

किंतु प्रस्तुत दो घड़ी में ही बीत जानेवाली वर्तमान गंभीर ''विषाद-रात्रि'' के समान और किसी भी ''**अमानिशा**'' ने अब तक इस ''**पुण्यभूमि**'' को आच्छन्न नहीं किया था। इस पतन की ''**गहराई**'' के सामने पहले के सभी पतन ''**गोष्पद**'' (गाय के खुर) के समान जान पड़ते हैं।

इसलिऐ इस ''**प्रबोधन**'' की समुज्वलता के सम्मुख पूर्व युग के समस्त उत्थान, उसी प्रकार ''**महिमाविहीन**'' हो जावेंगे, जिस प्रकार '**सूर्य**' के प्रकाश के सामने ''**तारागण**''। और इस ''पुनरुत्थान के महावीर्य की तुलना में प्राचीन काल के समस्त उत्थान ''**बालकेली**'' से जान पड़ेंगे। यह पुनरुत्थान ''**लुप्त-विद्या**'' के भी पुनः ''**आविष्कार**'' में भी सक्षम होगा। इसके प्रथम निर्देशनस्वरूप परम कारूणिक श्री भगवान् पूर्व सभी युगों की अपेक्षा अधिक पूर्णता प्रदर्शित करते हुए ''सर्वभाव समन्वित'' एवं ''सर्वविद्यायुक्त'' होकर युगावतार के रूप में अवतीर्ण हुए हैं।''

स्वामी जी ने एक और सटीक बात कही कि-''समस्त संसार हमारी मातृभूमि का महान् ऋणी है। किसी भी देश को ले लीजिए, इस जगत् में एक भी जाति ऐसी नहीं है, जिसका संसार उतना ऋणी हो, जितना कि वह यहाँ के धैर्यशील और विनम्र हिन्दुओं का है।''

स्वामी श्री विवेकानंद जी व महर्षि श्री अरविंद घोष भारत की ऐसी दो महान् आत्माएँ थी, जो स्वर्ण भारत के भोर की नूतन किरण की नूतन रोशनी के संदेशवाहक बनकर आए, जिन्होंने भारत के भूमण्डल पर भागवत सत्ता के भौतिक देह के अवतरण को सार्थक बनाया। उनके अवतरण का पूर्व संदेश दिया। अब ''भारत'', ''भारत'' बनेगा, यूरोप की कार्बन कॉपी नहीं !

स्वामी जी ने भारत की प्रकृति पर बोलते हुए कहा था कि भारतीय राष्ट्र कभी बलशाली, दूसरों को पराजित करनेवाला राष्ट्र नहीं बनेगा-कभी नहीं। वह कभी भी राजनीतिक शक्ति नहीं बन सकेगा; ऐसी शक्ति बनना उसका व्यवसाय ही नहीं-राष्ट्रों की संगीत-संगति में भारत इस प्रकार का स्वर कभी दे ही नहीं सकेगा। पर आखिर भारत का स्वर होगा क्या? वह स्वर होगा ईश्वर, केवल ईश्वर का। भारत उससे कठोर मृत्यु की तरह चिपका हुआ है।

और आज हम भारत के वर्तमान परिपेक्ष्य में देखें तो राजनीति के सिवाय कुछ नजर ही नहीं आ रहा है। चारों ओर राजनीतिक पार्टियों के आपसी वेमनस्य और कलह का कोलाहल मचा है। धर्म और दर्शन दूर तक नजर नहीं आ रहे हैं। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि स्वामीजी के श्राप के अनुसार

शेष पृष्ठ 35 पर...

"मेरी तस्वीर नहीं मरेगी, जब तक ये दुनिया रहेगी"

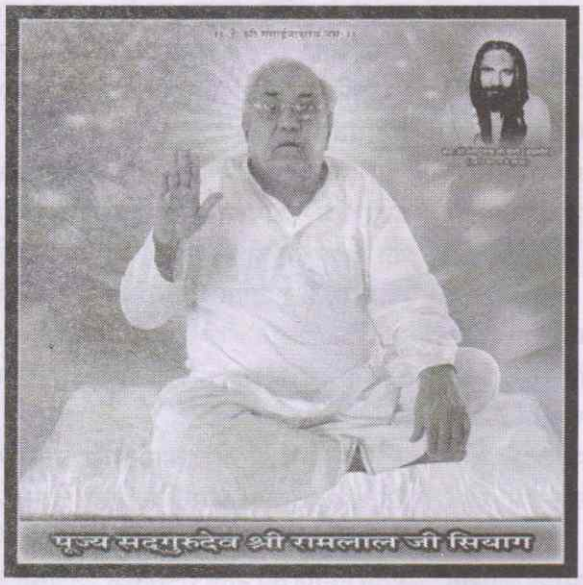

"एड्स क्योरेबल के 50 हजार पोस्टर लगा दिये। भारत सरकार को मालुम है, अच्छी तरह से। बीकानेर में मेरे पर मैजिक एक्ट की एफ आई आर करवा दी कि मैं मैजिक करता हूँ। मैंने कहा हाँ मैजिक करता हूँ, पर मैजिक तो दो तरह के होते हैं- White (सफेद) और Black(काला)। Black क्या कर रहा है, उसकी ही आपको जानकारी है, मुझे Black Magician (ब्लैक मैजिशियन) क्यों मान लिया। मैं जो दे रहा हूँ, उससे कई बीमारियाँ खत्म हो रही हैं, शांति मिल रही है, सब रोगों से मुक्त हो रहे हैं, नशों से मुक्त हो रहे हैं तो अब वो बोलते नहीं हैं, अब चुप हो गये। कहते हैं कि 81 वर्ष का तो हो गया। साल दो साल और जियेगा, मर जाएगा, पीछा छूट जाएगा। मैंने कहा मरना तो तुमको भी पड़ेगा, मुझको भी पड़ेगा। मगर मेरी तस्वीर नहीं मरेगी। मेरी तस्वीर से जो योग हो रहा है, वो नहीं मरेगी, कभी नहीं मरेगी। जब तक ये दुनिया रहेगी। ये परिवर्तन मुझमें आ गया Innocent way (अनेच्छा से, सहज रूप में, निर्दोषतापूर्ण) में आ गया। 1969 में गायत्री (निर्गुण निराकार) की सिद्धि हुई और 1984 में कृष्ण (सगुण साकार) की सिद्धि हो गई।"

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

ये हैं Black Magic & White Magic के प्रभाव-

काला जादू जहाँ दुनिया में कुछ चमत्कार दिखाकर, ठगने, हिंसा और पतन की ओर ले जाता है। उसका अंत बुरा ही होता है। पहले तो कुछ भला करने का प्रलोभन दिया जाता है; लेकिन आखिर में परिणाम बुरा ही निकलता है। इसकी जानकारी सारी दुनिया को है।

लेकिन एक White Magic भी होता है जिसकी जानकारी दुनिया को नहीं है, जो मनुष्य को सब कष्टों, आडम्बरों व नशों से मुक्त करके-मनुष्यत्व से देवत्व और अतिमानत्व की ओर ले जाता है। मनुष्य स्वयं परमात्मा है, इस निज स्वरूप का ज्ञान करा देता है। यदि सफेद जादू (White Magic) का करिश्मा देखना चाहते हो तो सद्गुरुदेव द्वारा दिये जाने वाले संजीवनी मंत्र का सघन जप व उनकी तस्वीर का ध्यान करके देखो !

आश्रमः- अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342003
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org

गुरु क्या है ?

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

हमारे धर्मशास्त्रों में 'गुरु' की बहुत महिमा गाई गई है। गुरु का पद ईश्वर से भी बड़ा माना गया है। इसलिए वेदान्त धर्म को मानने वाले, आजकल संसार के लोग जिन्हे हिन्दू कह कर संबोधित करते है, गुरु शिष्य-परम्परा को बहुत महत्त्व देते हैं। हमारी इसी मान्यता के कारण कुछ चतुर लोगों ने इस पद पर एकाधिकार कर लिया है।

एक वर्ग विशेष के घर में जन्मा बच्चा, जन्म से ही गुरु पैदा होता है। धर्म और गुरुपद का जितना दुरुपयोग इस युग में हो रहा है, आज तक कभी नहीं हुआ। गुरुओं की एक प्रकार से बाढ़ आ गई है। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध, इस युग में पूर्ण रूप से आर्थिक आधार पर टिका हुआ है।

आज का गुरु पूरे परिवार का स्वतः गुरु बन जाता है। यह सम्बन्ध आर्थिक शोषण पनपा रहा हैं, अतः हमें इस सम्बन्ध में गहराई से चिन्तन करने की आवश्यकता है। हमारे शास्त्रों में गुरुपद की जो महिमा की गई है, वह गलत नहीं हो सकती, फिर इस पद की दुर्गति क्यों हो रही है ? हमें इस बात की असलियत का पता लगाना चाहिए कि आखिर गुरु बला क्या है ? ऐसे ही गुरुओं का हमारे शास्त्रों में गुणगान किया गया है ? हमारे संतों ने गुरु के बारे में जो कुछ कहा है, उन्हीं गुण धर्म का प्राणी गुरु कहने योग्य है। संत कबीर ने गुरु की महिमा करते हुए कहा है कि

कबीरा धारा अगम की,
सद्गुरु दई लखाय।
उलट ताहि पढ़िए सदा,
स्वामी संग लगाय।।

इसके अलावा सभी संतों ने गुरु की एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर महिमा गाई है

''गुरु गोविन्द दोनों खड़े,
किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरुदेव की,
गोविन्द दियो मिलाय।।''

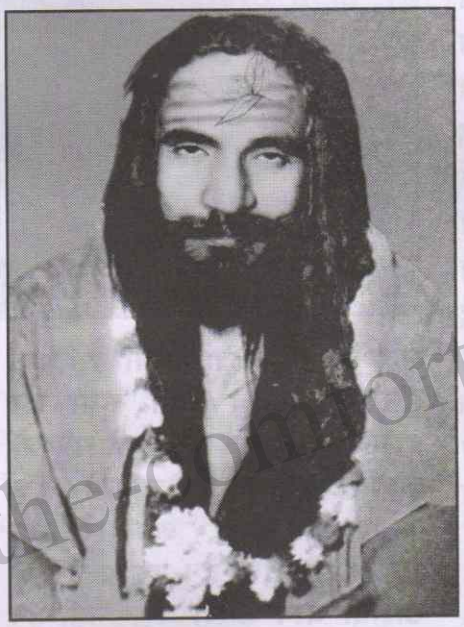

उपर्युक्त बातों से यही नतीजा निकलता है कि जिसमें गोविन्द से मिलाने की शक्ति है, मात्र वही गुरु कहलाने का अधिकारी है, गुरु पद का अधिकारी है। यह काम जो नहीं कर सकता, उसे कम से कम गुरु कहलाने का तो अधिकार नहीं है, बाकी वह कुछ भी बन सकता है। गुरु एक पद है । इस पर पहुँचने के लिए कई बातों की आवश्यकता है। जैसे भौतिक जगत् के पदों के लिए निर्धारित भौतिक ज्ञान की जरूरत है, उसी प्रकार इस पद पर पहुँचने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान की जरूरत है, क्योंकि यह पद आध्यात्मिक है।

जिस प्रकार लोहे में विभिन्न प्रकार की क्रियाओं में से गुजरने के बाद चुम्बकीय आकर्षण पैदा होता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य गहन आध्यात्मिक आराधनाओं से गुजरता हुआ, अपने संत सतगुरु की शरण में जाता है। गुरु अगर पात्र समझता है तो अपनी शक्तिपात उस शिष्य में कर देता है, जो कि पूर्ण रूप से समर्पित हो चुका होता है। इस प्रकार की शक्तिपात से मनुष्य 'द्विज' बन जाता है। इस प्रकार वह गुरु पद का अधिकारी तो हो जाता है, परन्तु उसे वह पद तब तक प्राप्त नहीं होता, जब तक उसका गुरु पंच भौतिक शरीर में रहता है। ज्यों हि गुरु का शरीर शान्त होता है, वे सभी आध्यात्मिक शक्तियाँ उस शिष्य के शरीर में प्रविष्ट हो जाती है । इस सारी क्रियाओं का ज्ञान केवल गुरु को ही होता है।

जिस शिष्य में शक्तिपात किया जाता है, वह गुरु के रहते हुए अनभिज्ञ ही रहता है। ज्यों ही गुरु का शरीर शान्त होने पर सारी शक्तियाँ उसमें प्रविष्ट होकर भौतिक जगत् में अपना प्रभाव दिखाने लगती है तो धीरे-धीरे उसे आभास होने लगता है। इस प्रकार जिसे अनेक जन्मों के कर्म फल के प्रभाव से **ईश्वर कृपा और गुरु के आशीर्वाद से गुरु पद प्राप्त होता है वही सच्चा आध्यात्मिक गुरु होता है।**

www.thecomforter.org

जिस प्रकार कर्मफल के अनुसार विशेष योग्यता पाने के बाद भौतिक पद की प्राप्ति होती, ठीक उसी प्रकार आध्यात्मिक गुरु का पद प्राप्त होता है। भौतिक पद का समय निर्धारित है परन्तु आध्यात्मिक जगत् का गुरुपद जीवन भर के लिए प्राप्त होता ।

ऐसा गुरु भौतिक जगत् में अपना कार्य पूर्ण करके जब अपने अन्तिम समय के पास पहुँच जाता है तो उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाती है। वह त्रिकालदर्शी बन जाता है। अपनी इस विचित्र स्थिति के कारण, वह उस उपयुक्त पात्र को, एक आसन पर बैठा ही खोज लेता, जिसे वह गुरु पद सौंप कर, इस भौतिक संसार से विदा लेनी चाहता है। अपनी आध्यात्मिक शक्ति के बल से उसे अपने पास बुलाकर समर्पण करवाता है और फिर आश्वस्त होकर प्रभु के ध्यान में लीन हो जाता है। इस प्रकार जिस व्यक्ति को गुरु पद प्राप्त किया हुआ होता है, इसमें मनुष्य का प्रयास अधिक सहायक नहीं होता। सच्चा गुरु वही होता है जो पूर्ण रूप से चेतन हो चुका होता है, उसका सीधा सम्बन्ध ईश्वर से होता है ।

इसलिए जो प्राणी ऐसे गुरु से जुड़ जाता है, उसे तत्काल आध्यात्मिक अनुभूतियाँ होने लगती है। आध्यात्मिक शक्तियाँ उसका भौतिक जगत् में पथ प्रदर्शन करने लगती है। इस प्रकार वह प्राणी भौतिक तथा आध्यात्मिक रूप से बहुत उपर उठ जाता है। तामसिकता उससे कोसों दूर भागती है। इस प्रकार शान्त, स्थिर और निर्भय, वह प्राणी अपना ही नहीं संसार के अनेक जीवों का कल्याण करता हुआ, अपने परम लक्ष्य को प्राप्त कर

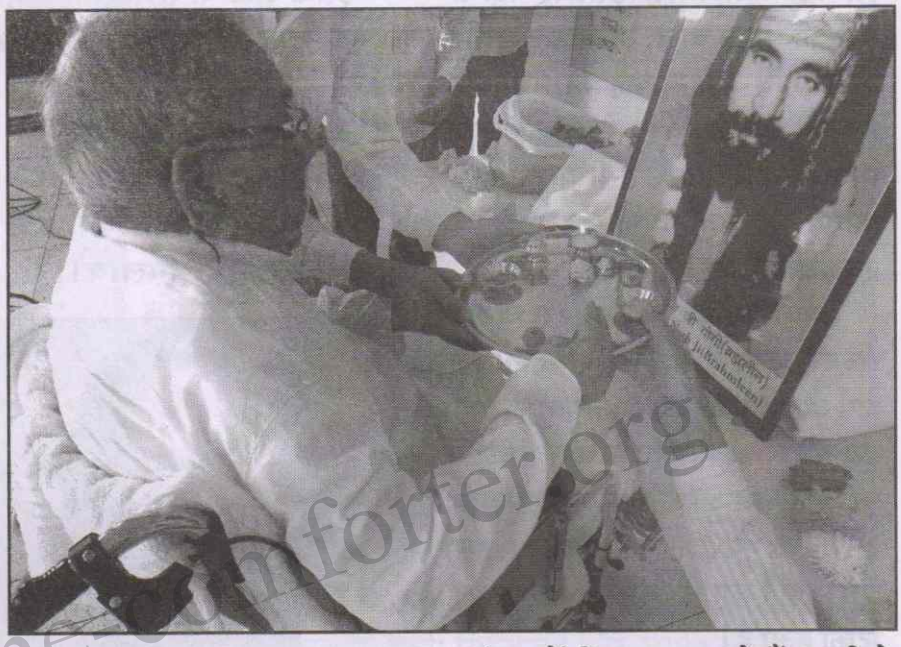

लेता है। यह होता है आध्यात्मिक संत सद्गुरुदेव की कृपा का प्रभाव। ऐसा संत पुरुष जो मनुष्यों को द्विज बनाने की स्थिति में पहुँच जाता है, गुरु कहलाने का अधिकारी होता है। गुरु पद कोई खरीदी जाने वाली वस्तु नहीं है। यह पद न किसी जाति विशेष में जन्म लेने से प्राप्त होता है, न कपड़े रंग कर स्वांग रचने से, न किसी शास्त्र के अध्ययन से। यह तो मन रंगने की बात है। ईश्वर करोड़ों सूर्यों से भी अधिक उर्जा का पुँज है, ऐसी परमसत्ता से जुड़ने के कारण, गुरु पारस बन जाता है। अतः जो मनुष्य इस पारस के सम्पर्क में आता है, सोना बन जाता हैं। ऐसे गुण धर्म के बिना जितने भी गुरु संसार में विचरण कर रहे हैं, सभी ने अपने पेट के लिए विभिन्न स्वांग रच रखे हैं। संसार के भोले प्राणियों को भरमाकर अपना स्वार्थसिद्ध कर रहे हैं। आध्यात्मिक जगत् में धन की मुख्य भूमिका नहीं होती। यह तो श्रद्धा, विश्वास, प्रेम, दया और समर्पण का जगत् है, धन की भूमिका इस जगत् में गौण है। सच्चा संत सद्गुरु भाग्य से ही मिलता है, इसमें मानवीय प्रयास अधिक सहायक नहीं होते हैं।

हरि हर आदिक जगत् में, पूज्य देव जो कोय।
सद्गुरु की पूजा किये, सब की पूजा होय।। गुरु गीता

अर्थात् सद्गुरुदेव भगवान् की पूजा-अर्चना करने पर सकल जगत् के देवी देवताओं की पूजा हो जाती है। अर्थात् एक सधै सब सधै, सब सधै सब जाय।

Beginning of my Spiritual Life

-Gurudev Shri Ramlal ji Siyag

All throughout this long period, the nature and intensity of concentration and prayer constantly remained the same. Morning from four to seven and in the evening from seven to nine, chanting continued uninterrupted. The chanting was stopped on the very next day of the completion of one lakh twenty- five thousand chants. Out of habit I woke up at 4:00 am but since chanting wasn't to be done, keeping my eyes closed, I kept lying on the bed.

I had started the chanting in the year 1968, from the first day of the **'Navratri'** that commences in winter, so it was very cold. While I was lying under the quilt with my eyes closed, I saw "A strange type of white light within me from navel till throat". No other parts of the body like liver, spleen, heart or lungs were visible except for the light. I was surprised to see this light within me, as light is seen through the eyes. Apart from this, why wasn't any part of the body visible in spite of the fierce white light. The moment I concentrated there, I heard humming sound of bees which was coming from the navel. I wondered how the sound of bees is coming from my stomach.

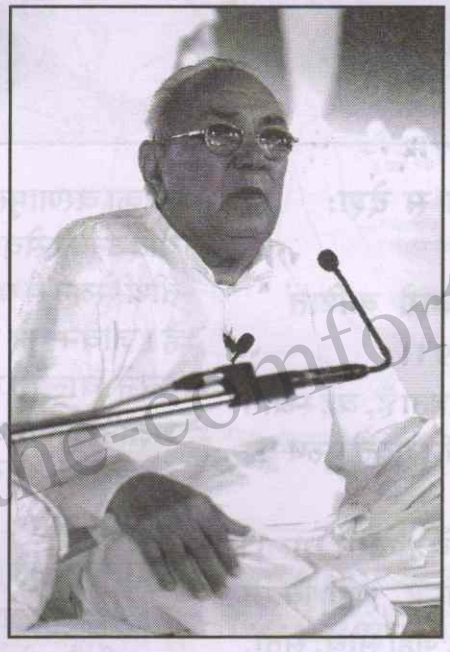

The more I concentrated on this sound, the more I could hear very clearly that 'Gayatri Mantra' is being chanted within, on

its own. The one who was chanting was not seen still it continued constantly and unhindered. For at least 10 to 15 minutes, I kept seeing and listening to all this and thought, how strange is this that light is perceived through eyes and sound through ears but how all this is being seen and heard from a position much lower than eyes and ears. The concentration broke at around five O'clock due to the sound of water dropping from the tap in the bathroom that had been left opened by children the previous evening.

After this I got up, completed my daily chores and left for job. Thought, may be due to following a particular routine for such a long period and having concentrated on it constantly that the thought stayed behind. But after this incident, such a transformation occurred that I became completely incapable of consuming 'Paan', cigarette, tea etc.

The very thought of using them brought a huge state of unrest within me. This way even though desired, it became impossible to use them. Eating food with anyone or having to tell a lie in any field of life, made me feel very uncomfortable.

Count. to Next Edition...

www.the-comforter.org

तीर्थधाम-सद्गुरुदेव का आश्रम

www.the-comforter.org

यत्रैव तिष्ठते सोअपि स देशः
पुण्यभाजनः।
मुक्तस्य लक्षणं देवि तवाग्रे कथितं
मया।। गुरु गीता 99।।

अनुवादः- ऐसा महापुरुष जहाँ रहता है, वह स्थान पुण्यतीर्थ है। हे देवी ! तुम्हारे समक्ष मैंने मुक्त पुरुष का लक्षण कहा है।

व्याख्याः-तीर्थ का अर्थ है-पवित्र करने वाला। जिन स्थानों पर कोई अवतार हुआ है, जहाँ किसी अवतारी पुरुष के चरण कमल पड़े हैं, जहाँ साधु, संतों, ज्ञानियों ने तपस्या की है, जहाँ सदा ज्ञान चर्चा होती रही है, ऐसे स्थान ही तीर्थ कहलाते हैं। जहाँ उनकी विचार तरंगें आज भी विद्यमान हैं, जो वहाँ पर जाने वाले व्यक्ति को अनायास ही शांति प्रदान करती हैं। उन स्थानों पर साधना करने से तत्काल ही फल मिलता है। किन्तु भगवान् शिव पार्वती से कहते हैं कि हे देवी ! जहाँ ऐसा वीतरागी ज्ञानी पुरुष रहता है, वह पुण्य तीर्थ ही है।

यदि उसका चरण स्पर्श करने को मिल जाए, यदि उनका चरणामृत पान करने का सुअवसर प्राप्त हो जाए, यदि उनकी सेवा करने का लाभ मिल जाए तो वह किसी तीर्थ सेवन से कम लाभकारी नहीं है। वही जीवित तीर्थ है। जीवन को गति देने वाला, सद्गुणों का विकास करने वाला, जीवन को आलोकित करने वाला, अज्ञानरूपी अंधकार का नाश करने वाला, जीवन में सौन्दर्य की अभिवृद्धि करने वाला तथा इस भवसागर से पार कराने वाला केवल ज्ञान है, **"जो केवल सद्गुरुदेव के कृपा प्रसाद से ही मिल सकता है।"**

उनकी वाणी ही जीवन में दिव्य रूपान्तरण ला सकती है। ऐसे मुक्त पुरुष, महापुरुष, सद्गुरुदेव भगवान् और अवतारी पुरुष जहाँ निवास करते हैं, वही पुण्यतीर्थ है। फिर अन्य तीर्थों के सेवन की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग पहली बार जुलाई 2007 में इजराइल और अमेरिका यात्रा पर पधारे थे। जब अगस्त 2007 को वापस जोधपुर आश्रम पधारे तो एक साधक को संबोधित करते हुए कहा कि **" यदि धरती पर कहीं स्वर्ग है तो ये जोधपुर आश्रम है।"**

गतांक से आगे...

योग के आधार

महर्षि श्री अरविन्द

श्रद्धा, अभीप्सा और आत्मसमर्पण

बहुत-से लोग साधना करते समय अपने मन, प्राण और शरीर में ही निवास करते हैं और वे मन, प्राण और शरीर कभी-कभी या कुछ अंश में ही उच्चतर मन और प्रबुद्ध मन के द्वारा उद्भासित होते हैं; किंतु अतिमानसिक परिवर्तन के लिये प्रस्तुत होने के लिये यह आवश्यक है कि (जैसे ही व्यक्ति-विशेष के लिये इसका समय आ जाये) संबोधि और अधिमानस की ओर आत्मोद्घाटन किया जाये, जिससे ये हमारी समस्त सत्ता और सारी प्रकृति को अतिमानसिक रूपांतर के लिये तैयार करे दे। चेतना को शांति के साथ विकसित और विस्तृत होने दो, फिर इन सब बातों का ज्ञान तुम्हें अधिकाधिक होता जायेगा।

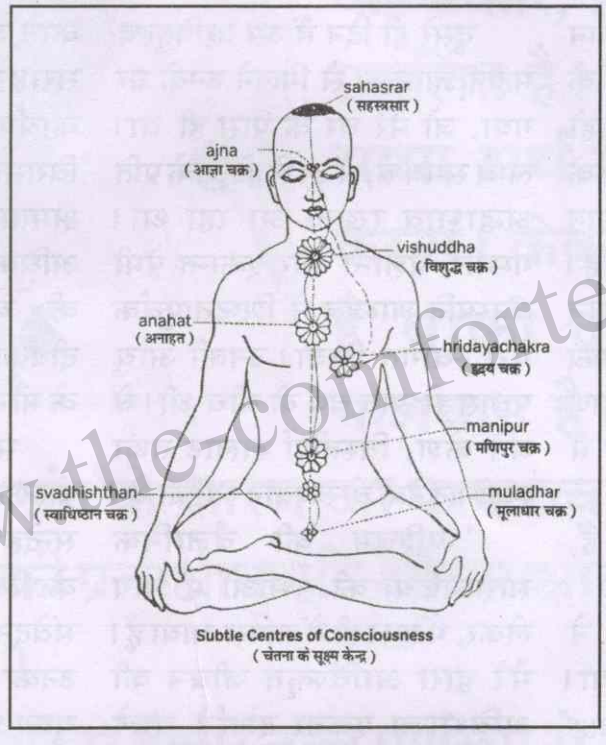

Subtle Centres of Consciousness
(चेतना के सूक्ष्म केन्द्र)

स्थिरता, विवेक-बुद्धि, अनासक्ति (किंतु उदासीनता नहीं) ये सब अत्यंत आवश्यक हैं, क्योंकि इनके जो विरोधी भाव हैं, वे रूपांतर के कार्य में बहुत अधिक बाधा पहुँचाते हैं। अभीप्सा में तीव्रता होनी चाहिये, परंतु इसे इन सब चीजों के साथ-साथ रहना चाहिये। न तो जल्दबाजी होनी चाहिये, न जड़ता; न तो राजसिक अति-उत्सुकता होनी चाहिये न तामसिक निरुत्साह-एक धीर-स्थिर, अविराम पर शांत आह्वान और क्रिया होनी चाहिये। सिद्धि को छीनने-झपटने या पकड़ लेने की वृत्ति नहीं होनी चाहिये, बल्कि उसे भीतर से या ऊपर से अपने-आप आने देना चाहिये, और उसके क्षेत्र, उसकी प्रकृति, उसकी सीमाओं का ठीक-ठीक निरीक्षण करते रहना चाहिये।

शक्ति को अपने अंदर कार्य करने दो, परंतु इस विषय में सावधान रहो कि कहीं तुम्हारे वर्धित अहंकार की कोई क्रिया या सत्य के रूप में सामने आनेवाली कोई अज्ञान की शक्ति उसके साथ मिलजुल न जाये या उसका स्थान स्वयं ग्रहण न कर ले। विशेष रूप से इस बात की अभीप्सा करो कि तुम्हारी प्रकृति में से समस्त अंधकार और अचेतनता दूर हो जाये।

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योगियों की आत्मकथा

''जगदीशचन्द्र बोस ने वायरलेस का आविष्कार, मार्कोनी से पहले ही कर लिया था।''

यह उत्तेजक टिप्पणी सुनकर मैं रास्ते के किनारे खड़े होकर विज्ञान विषयक चर्चा कर रहे प्रध्यापकों के एक दल के पास जाकर खड़ा हो गया। यदि उनमें सम्मिलित होने के पीछे मेरी भावना जाति के अभिमान की थी, तो मुझे उसका खेद है। भारत न केवल गूढ़ चिन्तन में, वरन् भौतिक विज्ञान में भी प्रमुख भूमिका निभा सकता है, इस बात के प्रमाण में अपनी गहरी अभिरुचि को मैं अस्वीकार नहीं कर सकता।

''आप कहना क्या चाहते हैं, सर?''

प्राध्यापक महोदय ने प्रसन्नतापूर्वक स्पष्टीकरण दिया। ''वायरलेस कोहीरर (Wireless coherer) और विद्युत तरंगों की वक्रता दर्शाने वाले एक यंत्र का आविष्कार सबसे पहले बोस ने किया था। परन्तु इस भारतीय वैज्ञानिक ने अपने आविष्कारों से कोई आर्थिक लाभ उठाने की चेष्टा नहीं की। शीघ्र ही उन्होंने अपना ध्यान अजैव से जैव जगत् की ओर मोड़ दिया। वनस्पति शास्त्रज्ञ के रूप में उनके द्वारा किये गये क्रांतिकारी आविष्कार उनके भौतिक विज्ञानी के रूप में किये गये मौलिक आविष्कारों से भी कहीं अधिक बढ़-चढ़कर हैं।''

मेरे ज्ञान में वृद्धि करने वाले प्राध्यापक महाशय का मैंने विनम्रतापूर्वक धन्यवाद किया। उन्होंने आगे कहा: ''यह महान् वैज्ञानिक प्रेसिडेन्सी कॉलेज में मेरे सहाध्यापक हैं।''

दूसरे ही दिन मैं उस ऋषितुल्य महान् ज्ञानवेता से मिलने उनके घर गया, जो मेरे घर के पास ही था। लम्बे समय से, मैं दूर से ही उनके प्रति श्रद्धाभाव रखाता आ रहा था। गम्भीर, प्रशान्त और एकान्त प्रेमी वनस्पति शास्त्रज्ञ ने शिष्टतापूर्वक मेरा स्वागत किया। उनकी आयु पचास से साठ वर्ष के बीच थी। वे घने केश, विस्तीर्ण ललाट तथा स्वप्निल नेत्रों के रूपवान व्यक्ति थे।

''पश्चिम की वैज्ञानिक सोसायटियों की सभाओं में भाग लेकर, मैं हाल ही में वापस आया हूँ। मेरे द्वारा आविष्कृत जीवन की अविभाज्य एकता दर्शाने वाले उपकरणों में उनके सदस्यों ने गहरी रुचि दिखायी। बोस क्रेस्कोग्राफ (Crescograph) की परिवर्धन-शक्ति (Magnifying power) एक करोड़ गुना है। माइक्रोस्कोप तो केवल कुछ सहस्र गुना ही परिवर्धन करता है, फिर भी उसने जीवविज्ञान को तीव्र गति प्रदान कर दी, जीवविज्ञान में प्राण फूँक दिये। क्रेस्कोग्राफ अगणित मार्ग खोलता है।''

''सर! आपने विज्ञान की अमूर्त बाहों से पूर्व और पश्चिम के आलिंगनबद्ध होने की प्रक्रिया को तेज करने के लिये बहुत कुछ किया है।''

''मेरी शिक्षा कैम्ब्रिज में हुई। प्रयोगों के आधार पर ही किसी भी सिद्धान्त की सूक्ष्म से सूक्ष्म जाँच करने की, पाश्चात्य पद्धति कितनी सराहनीय है! यह प्रयोगमूलक कार्यपद्धति मुझे अपनी पौर्वात्य विरासत में मिली आत्मपरीक्षण की क्षमता के साथ जुड़कर और भी अधिक प्रभावी हो गयी। इन दोनों की युति (सहयोग) ने मुझे दीर्घकाल से अबोल रहे प्रकृति-जगत् के मौन को तोड़ने में समर्थ बनाया।

सारे भेद खोल देने वाले मेरे क्रेस्कोग्राफ के रेखाचित्र प्रमाण हैं सन्देह करने वाले किसी भी व्यक्ति के लिये कि पेड़-पौधों में भी संवेदनशील स्नायु- तंत्र होता है और उनका जीवन विभिन्न भावनाओं से युक्त भी होता है।

प्रेम, घृणा, आनन्द, सुख, दुःख, मुर्च्छा और अन्य उत्तेजनाओं के प्रति असंख्य प्रकार की प्रतिक्रियाओं की भावानुभूति जिस प्रकार सब प्राणिओं को होती है, उसी प्रकार सब पेड़-पौधों को भी होती है।''

संदर्भ-योगी कथामृत, परमहंस योगानंद

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

आध्यात्मिक सत्संग

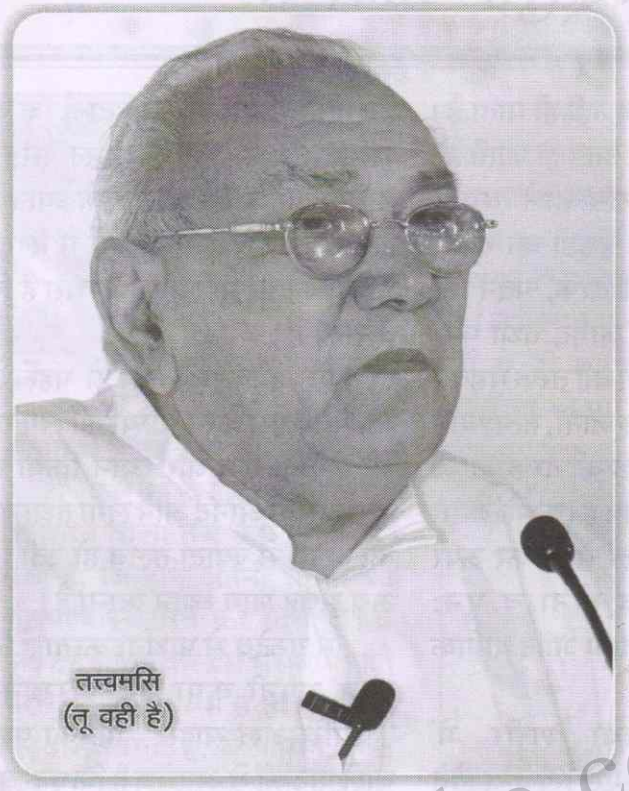

इस युग में आध्यात्मिक सत्संग का सही अर्थ प्रायः लुप्त हो चला है। भजन, कीर्तन, कथा, उपदेश आदि सत्संग के कई प्रकार, इस समय संसार में प्रचलित है। सत्संग का सीधा साधा अर्थ है, सत्य का साथ करना। केवल ईश्वर ही सत्य है बाकी दृश्य जगत् सारा नाशवान है।

अतः जिसके संग के कारण उस परमतत्त्व परब्रह्म परमात्मा, सच्चिदानंदघन की प्रत्यक्षानुभूति और साक्षात्कार हो जाय, वही सच्चा सत्संग है।

इस समय संसार से ईश्वर तत्त्व पूर्णरूप से लोप प्रायः हो गया है।

–समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

मुख्यालयः– अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.)-342001
संपर्क-0291-2753699, मो. 09784742595
Website:www.the-comforter.org, Email-avsk@the-comforter.org

अश्विनी अस्पताल में पाया सिद्धयोग का अद्भुत करिश्मा

परम पूज्य सद्गुरुदेव के चरणों में मेरा कोटि-कोटि प्रणाम। मैं अश्विनी अस्पताल में अपने पैर के इलाज के लिए भर्ती हुआ था। जून 2019 को मुझे इसी अस्पताल के प्रार्थना कक्ष में होने वाले ध्यान योग कार्यक्रम में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहीं पर मैंने पहली बार गुरुदेव सियाग की तस्वीर का ध्यान करने पर शरीर में होने वाली यौगिक क्रियाओं के बारे में जाना।

इसी दिन से मैं गुरुदेव द्वारा बताये हुए मंत्र का जप और ध्यान कर रहा हूँ। पहले दिन तो कुछ खास अनुभव नहीं हुआ; परन्तु दूसरे दिन से मुझे भी यौगिक क्रियाओं का अनुभव होने लगा। अब ध्यान के दौरान कुछ ऐसी-ऐसी यौगिक क्रियाएँ हो रही हैं जिसे मैं यदि जानबूझ कर अपने आप करना चाहूँ तो संभव नही हो पाता है। परन्तु ध्यान में अपने आप हो जाती हैं।

ध्यान के दौरान होने वाली क्रियाओं में रीढ़ की हड्डी का सीधा होकर पुनः पीछे की तरफ, गर्दन का मुड़ जाना और लेट जाना, तथा पुनः ऊपर उठना और आगे की तरफ मुड़कर सिर नीचे जमीन पर छू जाना, तत्पश्चात पुनः सीधा होकर पीछे की तरफ जाकर लेट जाना आदि विशेष है। कभी-कभी दोनों हाथों का बगल से उठकर ऊपर की तरफ खिंचाव होना व पुनः धीरे-धीरे नीचे आ जाना आदि यौगिक क्रियाएँ होती हैं।

इसके अलावा शरीर में अलग-अलग जगह ऐसे खिंचाव होते हैं, जिसका अनुभव तो सिर्फ ध्यान करके ही किया जा सकता है।

ध्यान के दौरान पेट अन्दर की तरफ अपने-आप खिंचता चला जाता है और सीना बाहर की तरफ फूलने लगता है तथा रीढ़ और कंधे में अजीब खिंचाव महसूस होता है। कुल मिलाकर मैं यह कह सकता हूँ कि जो भी बातें इस स्पिरिचुअल साइंस मासिक पत्रिका में गुरुदेव के ध्यान से होने वाली क्रियाओं के बारे में लिखी गई हैं, उन पर मुझे पूर्ण विश्वास है कि वे सत्य हैं।

प्रत्यक्षीकरण करने से पहले ये बात विश्वास करने योग्य नहीं लग रही थी लेकिन एक बार ध्यान किया तो ऐसा असीम आनंद आने लगा तथा नशे की तलब से ज्यादा तलब हो उठी कि अब सुबह शाम ध्यान करना है।

मैं गुरुदेव से प्रार्थना करता हूँ कि आप अपनी कृपा बनाये रखना। ''स्पिरिचुअल साइंस'' पत्रिका पढ़ने वाले पाठकों से अनुरोध है कि एक बार बताई गई विधि के अनुसार गुरुदेव की तस्वीर का श्रद्धापूर्वक ध्यान करके अवश्य देखें।

– वीरेन्द्र वर्मा
भारतीय वायुसेना,
बड़ोदरा (गुजरात)
16.06.2019

ॐ श्री गंगाईनाथाय नमः
समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
की असीम कृपा से गुरु-शिष्य मिलन का पावन पर्व
गुरु पूर्णिमा महोत्सव
मंगलवार, 16 जुलाई 2019 को सुबह 10.30 बजे जोधपुर आश्रम में मनाया जाएगा।
समस्त साधक गण सादर आमंत्रित हैं।
मुखयालयः-अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर
होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर
संपर्क-0291-2753699, 9784742595

गुरुपूर्णिमा पर्व-16 जुलाई 2019

गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः

गुरु एवं शिष्य के बीच सबसे पवित्रतम पर्व होता है "गुरु-पूर्णिमा"। 'गु' अक्षर का अर्थ है अंधकार और 'रु' अक्षर का तात्पर्य है उसका निरोधक।

अंधकार का विरोध या अज्ञान का नाश करने वाला तेज ब्रह्म ही गुरु है। गुरु वे है, जिन्होंने अपनी चेतना को पूर्णतया संस्कारित कर दिया है। वे स्थूल देह धारण कर इस संसार में रहते है परन्तु उनकी आत्मा सदैव परमात्मा में निवास करती है, वे जीवन मुक्त होते है। "गुरु" शब्द को अगर हमें एक पंक्ति में अभिव्यक्त करना पड़े तो उक्त कथन चरितार्थ होता है- **"गुरु वही जो गोविन्द से मिलाए"।**

हमारे धर्मग्रन्थों के अनुसार आज ही के दिन वेद-व्यास जी ने अपने शिष्यों को ज्ञान देना शुरु किया था, तभी से हम इस पवित्र पर्व को बड़ी श्रद्धा के साथ मनाते आ रहे हैं। ईश्वर निर्गुण निराकार होता है, उसका सगुण साकार रूप गुरु होता है। गुरुत्व उच्चतम एवं पवित्रतम तत्त्व है। इसकी अनुभूति विनम्र समर्पण से ही संभव है। गुरु के ज्ञान एवं तप के प्रभाव से ही सारा जग ज्योर्तिमय रहता है। वे संसार की अनंत गहराईयों में उतरकर अपने शिष्यों को मुक्ति प्रदान करते हैं।

ध्यानमूलं गुरोमूर्तिः
पूजामूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्य
मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।।

प्रत्येक युग में आराधना का अलग-अलग तरीका निर्धारित होता है। त्रेता, द्वापर व सत्युग में ईश्वर प्राप्ति के लिए अनेकानेक कर्मकाण्ड करने पड़ते थे किन्तु मुक्ति का सबसे सुगम मार्ग कलियुग में है। इसमें हरि नाम के जप से ही मनुष्य, इस संसाररूपी भवसागर के पार लग जाता है, बशर्ते गुरु धारण कर उनकी अनुपालना करते हुए सहज रूप में चलना पड़ा। यहाँ तक कि भगवान् श्री कृष्ण एवं भगवान् श्री राम तक को भी गुरु धारण करना पड़ा, जबकि उनके गुरु यह बात भली भांति जानते थे कि वे कोई साधारण मनुष्य नहीं हैं अपितु साक्षात् ईश्वर है, बावजूद इसके, उनको दीक्षा प्रदान की।

वह मंत्र जड़ न होकर समर्थ सद्गुरु के श्री मुख से दिया गया, चेतन मंत्र होना चाहिए। **मंत्र को परमात्मा का नाद-शरीर कहा गया है।** यह ध्वनि के रूप में परमात्मा है। भगवद्गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने भी कहा है- **"यज्ञानां जपयज्ञोस्मि"** अर्थात् सब प्रकार के यज्ञों में, मैं जप-यज्ञ हूँ।

मनुष्य चाहे लाख तीर्थ, मंदिरों में शीष नवाएं परंतु जब तक समर्थ सद्गुरु की शरण में नहीं जाता, तब तक उसकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता। इतिहास गवाह है जितने भी संत एवं गुरु हुए, उनको अपनी मुक्ति के लिए

गुरु समान दाता नहीं नहीं,
याचक शिष्य समान।
तीन लोक की सम्पदा,
गुरु पल में दीन्हीं दान।।

गुरु, सिद्धयोग का मूलभूत आधार स्तम्भ है। अतः गुरु शक्तिपात द्वारा शिष्य में अपनी दिव्य शक्ति को सीधे सम्प्रेषित करते हैं। तदुपरांत वह चेतन सत्ता जगत् जननी कुण्डलिनी अपनी यात्रा प्रारंभ कर देती है। ध्यान के दौरान वह शक्ति साधक का प्राण, मन, बुद्धि व शरीर अपने अधीन कर लेती है, जिससे साधक धीरे-धीरे असंप्रज्ञात (निर्बीज) समाधि में चला

जाता हैं एवं असीम आनंद का अनुभव करता है। ध्यान की इस निरंतर प्रक्रिया द्वारा ज्योंहि कुण्डलिनी शक्ति सहस्रार में पहुँचती है, साधक का ईश्वर से साक्षात्कार हो जाता है। इसे दूसरे शब्दों में पृथ्वी तत्त्व का आकाश तत्त्व में लय हो जाना या शिव का शक्ति से मिलन भी कहते हैं। चूंकि गुरु का शरीर पूर्ण शक्ति पूरक होता है। अतः जिसके हृदय में गुरु के प्रति असीम श्रद्धा व प्रेम हो उसे गुरु की शक्ति सहज ही प्राप्त हो जाती है।

यह तन विष की बेलरी,
गुरु अमृत की खान।
शीश दिये जो गुरु मिले
तो भी सस्ता जान।।

गुरु उस बड़ई के समान होते हैं जो एक लकड़ी के टुकड़े को काट-छांटकर एक निश्चित स्वरूप देते हैं। गुरु, शिष्य के अहंकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या आदि को काट छांटकर, निराई-गुड़ाई करता है। इस कार्य को तब तक करते हैं जब तक शिष्य को वांशित स्वरूप नहीं मिल जाता। गुरु, शिष्य को एक मुक्त जीवात्मा के रूप में परिवर्तित कर देते हैं।

इसके लिए शिष्य को लकड़ी के टुकड़े के समान शांत, मौन एवं अहंकार रहित होना आवश्यक है ताकि गुरु उसे एक निश्चित स्वरूप प्रदान कर सके। गुरु कृपा के लिए शिष्य को यही प्रेम एवं समर्पण का भाव रखना चाहिए। गुरु कृपा कोई शर्त नहीं है। यह तो गुरु का शिष्य के प्रति प्रेम का उन्मुक्त बहाव है और यह कृपा का अनुदान-वरदान शिष्य को कब मिलेगा? केवल गुरु पर निर्भर है। परंतु यह भी सर्वविदीत है कि सर्वस्व समर्पण एवं प्रेम से गुरु कृपा प्राप्त की जा सकती है।

तीन लोक नौ खण्ड में
गुरु ते बड़ा ना कोई
करता करे ना करि सके
गुरु करे सो होई।।

आज प्रत्येक व्यक्ति ने कोई न कोई गुरु धारण कर रखा है किन्तु गुरु धारण करने से पहले व बाद के जीवन में कोई परिर्वतन दृष्टि गोचर नहीं होता। इसका कारण स्पष्ट है कि जिस को उन्होंने अपना गुरु माना उनके स्वयं के पास कोई गुरु पद ही नहीं होता। केवल कपड़ा रंग कर गुरु बन जाते हैं। गुरु पद एक पवित्र उच्चतम पद होता है किन्तु आज कलियुग की पराकाष्ठा ही है कि चहुँ ओर प्रोफेशनल (व्यावसायिक) गुरुओं का ही बोलबाला है। इस कलियुग में केवल सद्गुरु के द्वारा दिया गया चेतन शब्द ही हमारी सभी समस्याओं का अंत कर सकता है।

गुरु द्वारा दिए गए 'मंत्र' एवं 'गुरु' में कोई फर्क नहीं होता है। समर्थ सद्गुरु द्वारा दिया गया 'बीज मंत्र' सिद्ध किया हुआ होता है और उस मंत्र में हजारों गुरुओं की कमाई होती है। ऐसा मंत्र अक्षरों व वर्णों का साधारण मिश्रण नहीं होता वरन् **चैतन्य शक्ति** है। परमात्मा का नाम परमात्मा से भिन्न नहीं है। मंत्र को परमात्मा का नाद-शरीर कहा गया है। अतः यह ध्वनि के रूप में परमात्मा है।

गुरु तो अजर-अमर, अनादि अनंत है। गुरु का न पूर्व है और न पश्चात्। गुरु है परिपूर्णता, उससे बढ़कर तीनों लोकों में दूसरा कोई नहीं है। उनका हृदय करूणा से ओत-प्रोत होता है। **शिष्य के जीवन में जो कुछ है सद्गुरु में ही निहित है।**

भक्ति ही गुरु-शिष्य के संबंध का आधार है। यही अंतर्निहित मूल सिद्धांत है कि जब तक मनुष्यों में ज्ञान की पिपासा है, श्रद्धा की भावना है तब तक संसार में भक्ति अक्षुण्ण रहेगी। इस प्रकार समर्थ गुरुओं का आविर्भाव सदा होता रहेगा, जिनके द्वारा अनुग्रह शक्ति की अविरल धारा शिष्यों तक प्रवाहित होती रहेगी।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु,
गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म,
तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

ईश्वर तो घट-घट का वासी है। अगर वह अपनी समस्त शक्तियों का प्रदर्शन करना चाहे तो माध्यम मनुष्य ही बनेगा। अतः गुरु ही इसके संचालन का अधिकारी है, क्योंकि गुरु को सहस्रार में स्थित परमतत्त्व की सिद्धि होती है। अतः यह बात मैं पूर्ण विश्वास एवं दावे के साथ कह सकता हूँ कि जिस प्रकार मृत्यु जीवन का अंतिम सत्य है, उतना ही ध्रुव एवं प्रगाढ़ सत्य है कि समर्थ गुरु के बिना ईश्वर से साक्षात्कार संभव नहीं है।

आत्मज्ञान को प्रदान करने वाले गुरु का स्थान संसार में सर्वोच्च-सर्वोपरि है। अतः गुरुदेव प्रतिपल स्मरणीय, पूजनीय एवं वंदनीय है। गुरु की व्याख्या शब्दों में करना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। कबीर ने एक जगह सटीक लिखा है-

सब धरती कागज करूँ,
लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ,
गुरु गुण लिखा न जाए।।

राजकुमार आसवानी
''राजू''
लक्ष्मी-निवास, गली नं.-2,
रानी बाजार
बीकानेर (राज.)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा मुम्बई द्वारा सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। 5 जून को महाप्रयाण दिवस, प्रत्येक रविवार को अश्विनी हॉस्पीटल में मरीजों को ध्यान कराया। 21 जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक ध्यान।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर शाखा कोटा आश्रम में महाप्रयाण दिवस पर सद्गुरुदेव–मूर्ति की पूजा–अर्चना के बाद सामूहिक ध्यान करते हुए साधक। (5 जून 2019)

www.the-comforter.org

AVSK बहरोड़–अलवर जिले के औद्योगिक क्षेत्र नीमराना में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सामूहिक ध्यान कराया गया। (21 जून 2019)

मानसरोवर (जयपुर) में अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सिद्धयोग शिविर का आयोजन।
जयपुर शहर के विभिन्न विद्यालयों में सैकड़ों विद्यार्थियों को ध्यान कराया गया। (21 जून 2019)

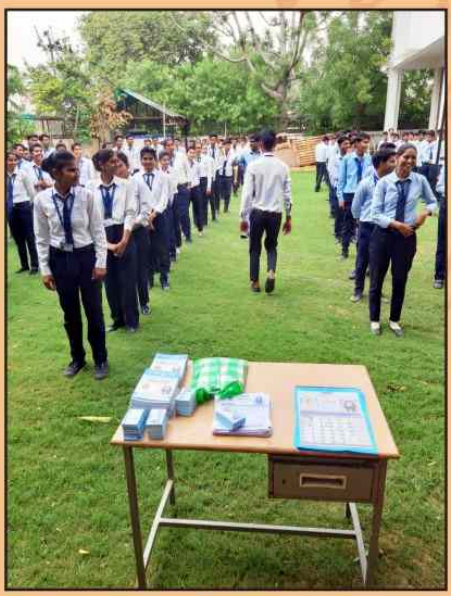

हाड़ौती क्षेत्र कोटा के समाचार पत्रों में गुरुदेव सियाग सिद्धयोग दर्शन

महाप्रयाण दिवस पर गुरु सियाग की विधिविधान से चरण वन्दना की

कोटा 7 जून। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर की शाखा कोटा के सीन्ता स्थित आश्रम मे समर्थ संत सदगुरू श्री रामलाल सियाग का "महाप्रयाण दिवस" धूमधाम के साथ मनाया गया। कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन एंव कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि प्रात: 10.30 बजे संत रामलाल सियाग एंव उनके गुरु बाबा श्री गंगाईनाथ योगी की तस्वीर की पूजा अर्चना सैकड़ों साधको की उपस्थिति मे की गई। संत के परम शिष्य हरकचन्द शर्मा एंव राकेश खण्डेलवाल ने संत की चरणपादुकाओ का प्रक्षालन कर आरती की तथा कोटा शाखा के प्रमुख सेवक मुकेश कुमार ने उपस्थित श्रद्धालुओ को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देते हुये गुरु प्रदत्त संजीवनी मंत्र के जप के साथ 15 मिनट का परम्परागत मेडिटेशन करवाया गया इस दौरान महर्षि पातंजली योगसूत्र मे वर्णित आसन,

बन्ध, प्राणायाम एंव मुद्राये साधको को स्वत: ही होने लगी जिससे आश्रम का वातावरण देखने लायक था और नये साधको के लिये आश्चर्यभरा भी। 15 मिनट के बाद सभी साधक सामान्य मुद्रा मे आ गये तथा सभी ने लाईन मे लगकर अपनी बारी से संत के आसन के सम्मुख जा कर अपने सदगुरू संत की भीगी पलको के साथ याद करते हुवे श्रद्धानवत हो कर चरणवंदना कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस अवसर पर आश्रम द्वारा प्रसाद वितरण भी किया गया।

दिनभर आश्रम मे श्रद्धाओ का तांता लगा रहा तथा सभी ने महाप्रयाण के अवसर पर अपने गुरु को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। राजेश गौतम ने बताया कि संत का महाप्रयाण दिवस अमेरिका एंव ईस्रायल आदि देशो मे भी श्रद्धा के साथ मनाया गया।

लाखो की संख्या मे ईसाई एंव यहूदी भी संत के शिष्य है।

इसी तरह अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर सहित भारत के सभी केन्द्रो पर संत रामलाल सियाग की पूजा अर्चना एंव ध्यान कर इस अवसर गुरूदेव को श्रद्धासुमन अर्पित किये गये।

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर के अध्यक्ष राजेन्द सियाग एंव ट्रस्टी रामूराम चौधरी ने अपने गुरु एंव उनके द्वारा भारत सरकार के देवस्थान विभाग मे रजिस्टर्ड मिशन के प्रति एकनिष्ट रहने का संदेश देते हुये कहा कि यह गुरुदेव का आदेश है और यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली भी।

इस अवसर पर बृजसुन्दर नामा, तपोधन दाधीच, हेमन्त, राजु, दिलीप आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

महाप्रयाण दिवस मनाया धूमधाम से

नवज्योति/कोटा

सीन्ता स्थित आश्रम में सद्गुरु रामलाल सियाग का महाप्रयाण दिवस मनाया गया। अध्यक्ष पदम जैन एवं कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि संत रामलाल सियाग एवं उनके गुरु बाबा गंगाईनाथ योगी की तस्वीर की पूजा अर्चना की गई। हरकचन्द शर्मा एंव राकेश खण्डेलवाल ने संत की चरण पादुकाओं का प्रक्षालन कर आरती की तथा कोटा शाखा के प्रमुख सेवक मुकेश कुमार ने श्रद्धालुओं को जप के साथ 15 मिनट का परम्परागत मेडिटेशन करवाया गया। इस अवसर पर बृजसुन्दर नामा, तपोधन दाधीच, हेमन्त, राजु, दिलीप आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर 08-Ju[n] कोटा सि[टी]

आध्यात्मिक सत्संग में रामगंजमंडी से भी पहुंचे साधक

सीता आश्रम में हुआ आयोजन, योगिक क्रियाएं देख आश्चर्यचकित हुए लोग

रामगंजमंडी. कोटा में आयोजित आध्यात्मिक सत्संग केंद्र में आयोजित शिविर में मौजूद साधक।

कोटा/रामगंजमंडी। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर की शाखा कोटा के सीन्ता स्थित आश्रम में समर्थ संत सद्गुरु रामलाल सियाग का "महाप्रयाण दिवस" धूमधाम के साथ मनाया गया। इस आध्यात्मिक सत्संग में रामगंजमंडी से भी साधक बड़ी संख्या में पहुंचे।

कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन व कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि प्रात: 10.30 बजे संत रामलाल सियाग व उनके गुरु बाबा गंगाईनाथ योगी की तस्वीर की पूजा अर्चना सैकड़ों साधकों की उपस्थिति में की गई। संत के परम शिष्य हरकचन्द शर्मा एवं राकेश खण्डेलवाल ने संत की चरणपादुकाओं का प्रक्षालन कर आरती की। कोटा शाखा के प्रमुख सेवक मुकेश कुमार ने उपस्थित श्रद्धालुओं को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देते हुए गुरु प्रदत्त संजीवनी मंत्र के जप के साथ 15 मिनट का परम्परागत मेडिटेशन करवाया गया। इस दौरान महर्षि पतंजलि योगसूत्र में वर्णित आसन, बन्ध, प्राणायाम व मुद्राएं साधकों को स्वत: ही होने लगीं जिससे आश्रम का वातावरण देखने लायक था और नए साधकों के लिए आश्चर्यभरा भी। 15 मिनट के बाद सभी साधक सामान्य मुद्रा में आ गए तथा सभी ने लाइन में लगकर

रामगंजमंडी. आध्यात्मिक सत्संग केंद्र में विराजमान गुरुदेव।

अपनी बारी से संत के आसन के सम्मुख जा कर अपने सद्गुरु संत की भीगी पलकों के साथ याद करते हुए श्रद्धानवत हो कर चरण वंदना कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर आश्रम द्वारा प्रसाद वितरण भी किया गया। दिनभर आश्रम में श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा। सभी ने महाप्रयाण के अवसर पर अपने गुरु को श्रद्धासुमन अर्पित किए। राजेश गौतम ने बताया कि संत का महाप्रयाण दिवस अमेरिका व इजरायल आदि देशों में भी श्रद्धा के साथ मनाया गया। लाखों की संख्या में ईसाई व यहूदी भी संत के शिष्य हैं। इसी तरह अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर सहित भारत के सभी केन्द्रों पर संत रामलाल सियाग की पूजा अर्चना व ध्यान कर इस अवसर गुरुदेव को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर के अध्यक्ष राजेन्द्र सियाग व ट्रस्टी रामूराम चौधरी ने अपने गुरु व उनके द्वारा भारत सरकार के देवस्थान विभाग में रजिस्टर्ड मिशन के प्रति एकनिष्ठ रहने का संदेश देते हुए कहा कि यह गुरुदेव का आदेश है और यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि भी। इस अवसर पर बृजसुन्दर नामा, तपोधन दाधीच, हेमन्त, राजु, दिलीप आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

स्वत: ही होने लगे आसन, बंध व प्राणायाम मुद्राएं

>> संत रामलाल सियाग का महाप्रयाण दिवस मनाया

संदेश न्यूज। कोटा. अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र जोधपुर की शाखा कोटा के सीता स्थित आश्रम मे संत रामलाल सियाग का महाप्रयाण दिवस धूमधाम के साथ मनाया गया। कोटा शाखा के अध्यक्ष पदम जैन एवं कोषाध्यक्ष राजेश गौतम ने बताया कि सुबह 10.30 बजे संत रामलाल सियाग एवं उनके गुरु बाबा गंगाईनाथ योगी की तस्वीर की पूजा अर्चना सैकड़ों साधकों की उपस्थिति में की गई। संत के परम शिष्य हरकचन्द शर्मा एवं राकेश खण्डेलवाल ने संत की चरणपादुकाओं का प्रक्षालन

कर आरती की तथा कोटा शाखा के प्रमुख सेवक मुकेश कुमार ने उपस्थित श्रद्धालुओं को सिद्धयोग दर्शन की जानकारी देते हुए गुरु प्रदत्त संजीवनी मंत्र के जप के साथ 15 मिनट का परम्परागत मेडिटेशन करवाया गया। इस दौरान महर्षि पातंजली योगसूत्र में वर्णित आसन, बन्ध, प्राणायाम एंव मुद्राएं साधकों को स्वत: ही होने लगी जिससे आश्रम का वातावरण देखने लायक था और नए साधकों के लिए आश्चर्यभरा भी। 15 मिनट के बाद सभी साधक सामान्य मुद्रा में आ गए तथा सभी ने लाइन में संत के आसन के सम्मुख जाकर भीगी पलकों के साथ याद करते हुए चरणवंदना कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

www.the-comforter.org

कहानी....

सच्चा विश्वास

शरणागत को सब कुछ मिलता

उस मातृ-हृदय ने उस अलौकिक तत्त्व में दिव्य चरवाहे के रूप में अपने पुत्र गोपाल को पाया। उसकी आत्मा जो यन्त्रवत् ही सांसारिक पदार्थों में, उसकी आत्मा जो दैवी आकाश में निरन्तर मँडराती हुई किसी भी, लौकिक वस्तु के सम्पर्क से स्वखलित हो सकती थी, वह मानो इस बालक में अपने लिए एक लौकिक आश्रय जाग गयी। केवल यही एक चीज थी, जिस पर वह अपना समस्त लौकिक सुख एवं अनुराग केन्द्रित कर सकती थी। उसका प्रत्येक विचार, प्रत्येक सुख और उसका जीवन तक, क्या उस बालक के लिए ही था, जिसके कारण वह अब भी जीवित थी?

वर्षों तक एक माँ की ममता के साथ वह रोज अपने बच्चे को दिन-दिन बढ़ते हुए देखती रही। और जब वह स्कूल जाने लायक हो गया है, उसे अब भी उसकी पढ़ाई-लिखाई का सामान जुटाने के लिए कितना कठिन श्रम करना पड़ता है। हालांकि ये सब सामान बहुत थोड़े से थे। उस देश में जहाँ के लोग मिट्टी के दीपक के प्रकाश में कुश-काँस की चटाई पर निरन्तर विद्याध्ययन करते हुए सन्तोषपूर्वक सारा जीवन बिता देते हैं, वहाँ एक विद्यार्थी की आवश्यकताएँ ही कितनी रही होगी? फिर भी कुछ तो थीं ही; पर इतने से जुगाड़ के लिए भी बेचारी माँ को कई दिनों तक घोर परिश्रम करना पड़ता था। गोपाल के लिए एक धोती, एक चादर और चटाई का बस्ता, जिसमें लिखने का अपना ताड़-पत्र और सरकण्डे की कलम समेटकर वह पढ़ने के लिए पाठशाला जाता था, और स्याही-दवात इन सब को खरीदने के लिए उसे अपने चरखे पर कई-कई दिनों तक काम करना पड़ता था।

एक शुभ दिन, गोपाल ने जब पहले-पहल लिखने का श्रीगणेश किया, उस समय का, उसका आनन्द केवल एक माँ का हृदय-एक गरीब माँ का हृदय-ही जान सकता है, उस जीवन दायिनी माँ के हृदय में अपार खुशी थी।

लेकिन आज उसके मन पर एक

दुश्चिन्ता छायी हुई है। गोपाल को अकेले जंगल में से होकर जाने में डर लग रहा है। इसके पहले कभी उसे अपने वैधव्य की, अपने एकाकीपन और निर्धनता की अनुभूति इतने कटु रूप में नहीं हुई थी। एक क्षण के लिए उसके सामने कुछ अन्धकारमय हो गया, किन्तु तभी उसे प्रभु के शाश्वत आश्वासन का स्मरण हो आया कि 'जो सब चिन्ताएँ त्यागकर मेरे शरणागत होते हैं, मैं उनकी समस्त आवश्यकताएँ पूर्ण कर देता हूँ।' और इस आश्वासन में पूर्णतया विश्वास करने वालों में एक उसकी भी आत्मा थी।

अतः माता ने अपने आँसू पोछ लिये और अपने बच्चे से कहा कि डरो नहीं! जंगल में मेरा एक दूसरा बेटा रहता है और गायें चराता है। उसका भी नाम गोपाल है। जब भी तुम्हें जंगल में जाते समय डर लगे, अपने भैया को पुकार लिया करना।

बच्चा भी तो आखिर उसी माँ का बेटा था, उसे विश्वास हो गया। कोई तर्क नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास, उसको पाने का यही तो सच्चा राज है।

उसी दिन पाठशाला से घर लौटते समय जंगल में जब गोपाल को डर लगा, बस उसने अपने चरवाहे भाई गोपाल को पुकारा, 'गोपाल भैया! क्या तुम यहीं हो? माँ ने कहा था कि तुम हो और मैं तुम्हें पुकार लूँ। मैं अकेले डर रहा हूँ।' और पेड़ों के पीछे से एक आवाज आयी, 'डरो मत छोटे भैया, मैं यहीं हूँ, निर्भय होकर घर चले जाओ।

इस तरह रोज वह बालक पुकारा करता था और रोज वही आवाज उसे उत्तर देती थी। माँ ने यह सब आश्चर्य एवं प्रेम के भाव से सुना और गोपाल को सलाह दी कि अब की बार वह अपने जंगल वाले भाई को सामने आने के लिए कहे।

दूसरे दिन जब वह बालक जंगल से गुजर रहा था, उसने अपने भाई को पुकारा। सदा की भाँति ही आवाज आयी। लेकिन बालक ने भाई से कहा कि वह सामने आये। उस आवाज ने उत्तर दिया। 'आज मैं बहुत व्यस्त हूँ भैया, नहीं

www.the-comforter.org

आ सकता।' लेकिन बालक ने हठ किया, तब वह पेड़ों की छायाओं से एक ग्वाले के वेश में सिर पर मोरपंख का मुकुट पहने और हाथ में मुरली लिये बाहर निकल आया। वे दोनों ही गोपाल आपस में मिलकर बड़े खुश हुए। वे घण्टों जंगल में खेलते रहे-पेडों पर चढ़ते, फल-फूल बटोरते, पाठशाला जाने में देर हो गयी। तब अनिच्छापूर्वक बालक गोपाल पाठशाला के लिए चल पड़ा। वहाँ उसे अपना कोई पाठ याद न रहा, क्योंकि उसका मन तो इसमें लगा था कि कब वह जंगल में जाकर अपने भाई के साथ खेलें। इसी तरह महीनों बीत गये।

माँ बेचारी यह सब रोज-रोज सुनती थी और ईश्वरकृपा के आनन्द में अपना वैधव्य, अपनी गरीबी सब कुछ भूल जाती थी, और हजार बार अपनी निर्धनता को धन्य मानती थी। इसी पाठशाला के गुरुजनों के अपने पितरों के सम्मानार्थ कुछ धार्मिक कृत्य करने थे। इन ग्राम-शिक्षकों को, जो निःशुल्क रूप से कुछ बालकों को इकट्ठा करके पाठशाला चलाते थे, खर्च के लिए यथावसर प्राप्त होने वाली भेंटों पर ही निर्भर रहना पड़ता था।

प्रत्येक शिष्य को भेंट में धन अथवा वस्तुएँ लानी होती थीं। और विधवापुत्र अनाथ गोपाल को? दूसरे लड़के जब यह कहते कि वे भेंट में क्या-क्या लायेंगे, तब वे गोपाल के प्रति तिरस्कार से मुस्कराया करते थे।

उस रात गोपाल का मन बहुत भारी था। उसने अपनी माँ से गुरुजी को भेंट में देने के लिए कुछ माँगा। लेकिन बेचारी माँ के पास भला क्या रखा था? लेकिन उसने हमेशा की तरह इस बार भी अपने गोपाल पर ही निर्भर रहने का निश्चय किया, और अपने पुत्र से बोली कि वह वनवासी अपने भाई से गुरु को भेंट देने के लिए कुछ माँगे।

दूसरे दिन सदा की भाँति जब गोपाल जंगल में अपने चरवाहे भाई से मिला और जब थोड़ी देर तक खेल-कूद चुके, तब गोपाल ने अपने भाई को बताया कि उसे क्या दुःख है? और अपने गुरुजी को देने लिए कोई भेंट माँगी। चरवाहे बालक ने कहा, 'भैया गोपाल! तुम तो जानते ही हो कि मैं एक मामूली चरवाहा हूँ और मेरे पास धन नहीं है, लेकिन यह मक्खन की हँडियाँ तुम लेते जाओ और अपने गुरुजी को भेंट कर दो।' गोपाल इस बात से बहुत खुश हुआ कि अब उसके पास भी गुरुजी को भेंट देने के लिए कोई चीज हो गयी है, लेकिन इस बात की उसे और भी खुशी थी कि यह भेंट उसे अपने वनवासी भाई से प्राप्त हुई है।

वह खुशी-खुशी गुरु जी के घर की तरफ बढ़ा और जहाँ बहुत से लड़के गुरुजी को अपनी-अपनी भेंट दे रहे थे, वहीं सबसे पीछे उत्सुकता से खड़ा हो गया। सबके पास भेंट देने को विभिन्न प्रकार की अनेक वस्तुएँ थी। और किसी को भी बेचारे अनाथ बालक की भेंट की तरफ देखने तक की फुरसत न थी। वह उपेक्षा अत्यन्त असह्य थी। गोपाल की आँखों में आँसू आ गये। तभी सोभाग्य से गुरुजी की दृष्टि उसकी ओर गयी। उन्होंने गोपाल के हाथ से मक्खन की हाँड़ी ले ली और उसे एक बड़े बरतन में उँड़ेला और वह फिर भर गयी। और इस तरह से होता गया। जब तक वे मक्खन उँड़ेलकर खाली करें कि वह फिर भर जाती थी।

इससे सभी लोग चकित रह गये। तब गुरुजी ने अनाथ बालक को गोद में उठा लिया और मक्खन की हाँड़ी के बारे में पूछा। गोपाल ने अपने वनवासी चरवाहे भाई के बारे में सब कुछ बता दिया कि कैसे वह उसकी पुकार का जवाब दिया करता था, कैसे वह उसके संग खेला करता था और अन्त में बताया कि कैसे उसने मक्खन की हाँड़ी दी?

गुरुजी ने गोपाल से कहा कि वह उसे जंगल में ले चलें, अपने भाई को दिखलायें। गोपाल के लिए इससे बढ़कर खुशी की बात और क्या हो सकती थी?

उसने अपने भाई को पुकारा कि वह सामने आए। लेकिन उस दिन उत्तर में कोई आवाज नहीं आई। उसने कई बार पुकारा। कोई उत्तर नहीं। और वह जंगल में अपने भाई से बात करने के लिए घुसा। उसे भय था कि उसके गुरुजी कहीं उसे झूठा न मान लें। तब बहुत दूर से आवाज आई।

'गोपाल! तुम्हारी मां और तुम्हारे प्रेम एवं विश्वास के कारण ही मैं तुम लोगों के पास आया था, लेकिन अपने गुरुजी से कह दो कि उन्हें अभी बहुत दिनों तक इंतजार करना होगा।'

लेकिन आज वह निर्गुण निराकार का सगुण साकार रूप सद्गुरु धरती पर है। जो उनका सानिध्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं, वे धन्य हैं। **सच्चा प्रेम ही ठेट, परब्रह्म तक ले जाता है।** सृष्टिकाल से मध्यकाल तक तो वह शक्ति विरलों को ही दूर से आवाज देती या उनको दर्शन देती थी। लेकिन आज वो निकट से आवाज दे रही है। यदि कोई उनको पुकारे।

आज वो आवाज बीहड़ जगंलों से नहीं बल्कि निकट, अति निकट से आ रही है। करोड़ों के उद्धार का समय है। वही मोर मुकुट धारित बाल- गोपाला धारा पर है। क्या उसके साथ नहीं खेलोगे? यदि हाँ तो, बस सद्गुरु छवि का आज्ञाचक्र पर ध्यान कर लो रहस्य खुल जाएगा। **साधक**

❖❖❖

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

मनुष्य और विकास

हो सकता है कि एक दिन वह समझ ले, स्वयं अपने अंदर ज्यादा गहराई में जाये और साधन, गुप्त ऊर्जा, और चित्-शक्ति की अभिप्रेत क्रिया को खोज ले जिसके भीतर, जिसे हम प्रकृति कहते हैं, उसकी वास्तविकता छिपी है।

जड़ में विकसित विचारशील मन के इस आगमन से पहले तक विकास सजीव सत्ता की आत्म-अभिज्ञ अभीप्सा, निश्चय, इच्छा या खोज द्वारा नहीं बल्कि अवमानसिक या अंतर्लीन ढंग से प्रकृति की स्वचालित क्रिया द्वारा सम्पादित हुआ था।

यह ऐसा इसलिए था क्योंकि विकास निश्चेतना से शुरू हुआ था और प्रच्छन्न चेतना अभी तक उसमें से इतने पर्याप्त रूप से नहीं उभरी थी कि अपने जीवित प्राणी में भाग लेने वाली आत्म-अभिज्ञ व्यष्टिगत इच्छा में से कार्य करे। लेकिन मनुष्य में आवश्यक परिवर्तन कर दिया गया है-सत्ता जाग्रत और अपने बारे में अभिज्ञ हो गयी है।

उसकी विकसित होने की, ज्ञानवृद्धि की, आंतरिक सत्ता को गहरा और बाहरी सत्ता को विस्तृत करने की और प्रकृति की क्षमताओं को बढ़ाने की इच्छा मन में व्यक्त कर दी गयी है। मनुष्य ने देखा है कि उसकी अपनी चेतना स्थिति से उच्चतर चेतना स्थिति हो सकती है, उसके मन और प्राण के भागों में विकसनशील उद्दीपन है।

उसमें अपना अतिक्रमण करने की अभीप्सा मुक्त और व्यक्त है। वह अंतरात्मा के बारे में सचेतन हो गया है, उसने आत्मा और आध्यात्मिक पुरुष को खोज लिया है। अतः उसमें अवचेतन की जगह सचेतन विकास कल्पनागम्य और व्यावहारिक बन गया है। भलीभाँति यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उसमें अभीप्सा के उभार के लिये प्रकृति की इच्छा का निश्चित चिह्न है।

विकास की पिछली स्थितियों में प्रकृति का पहला ध्यान और प्रयास भौतिक संगठन में परिवर्तन की ओर था, क्योंकि केवल उसी तरह चेतना में परिवर्तन हो सकता था। यह एक ऐसी आवश्यकता थी, जो शरीर में परिवर्तन लाने के लिये पहले से गठित होती हुई चेतना की शक्ति की अपर्याप्तता के कारण आरोपित हुई थी।

लेकिन मनुष्य में उल्टाव संभव है, वस्तुतः अनिवार्य है क्योंकि उसकी चेतना द्वारा, चेतना के रूपांतर द्वारा ही-उसके पहले यंत्र-विन्यास के रूप में नये शारीरिक संगठन द्वारा नहीं-क्रमविकास संपन्न हो सकता है और होना चाहिए। वस्तुओं की आंतरिक वास्तविकता में चेतना का परिवर्तन हमेंशा प्रधान तत्त्व रहा है, विकास का हमेंशा आध्यात्मिक महत्त्व रहा है और भौतिक परिवर्तन केवल उपकरण की तरह था लेकिन यह संबंध इन दो तत्त्वों के प्रथम असामान्य संतुलन के कारण छिपा रहता था।

जबकि बाहरी निश्चेतना का शरीर आध्यात्मिक तत्त्व से, सचेतन सत्ता से महत्त्व से बढ़कर था और उसे आवृत्त किये हुए था। लेकिन एक बार संतुलन ठीक हो जाये तो फिर चेतना के परिवर्तन से पहले शरीर के परिवर्तनका आना जरूरी नही रह जाता।

स्वयं चेतना अपने परिवर्तन द्वारा शरीर के लिये जो कोई परिवर्तन आवश्यक है उसे कार्यान्वित करेगी। यह ध्यान देने योग्य है कि मानव मन ने वनस्पिति और पशु के नये प्ररूप विकसित करने में, प्रकृति की सहायता करने में पहले ही क्षमता दिखलायी है। उसने वातावरण के नये रूप बनाये हैं, ज्ञान और अनुशासन द्वारा स्वयं अपनी मानसिकता में काफी परिवर्तन विकसित किये है।

यह असंभव नहीं है कि मनुष्य स्वयं अपने भौतिक और आध्यात्मिक विकास और रूपांतर में प्रकृति की सचेतन सहायता भी करे। उसके लिये प्रेरणा पहले से ही है और अंशतः वह सफल भी है। यद्यपि अभी तक सतही मानसिकता उसे अपूर्ण रूप से समझती और स्वीकार करती है। हो सकता है कि एक दिन वह समझ ले, स्वयं अपने अंदर ज्यादा गहराई में जाये और साधन, गुप्त ऊर्जा, और चित्-शक्ति की अभिप्रेत क्रिया को खोज ले जिसके भीतर, जिसे हम प्रकृति कहते हैं, उसकी वास्तविकता छिपी है।

❖❖❖

क्रमशः अगले अंक में...

सद्गुरुदेव की दिव्य वाणी

"सद्गुरु कृपा से क्षणभर में परिवर्तन"

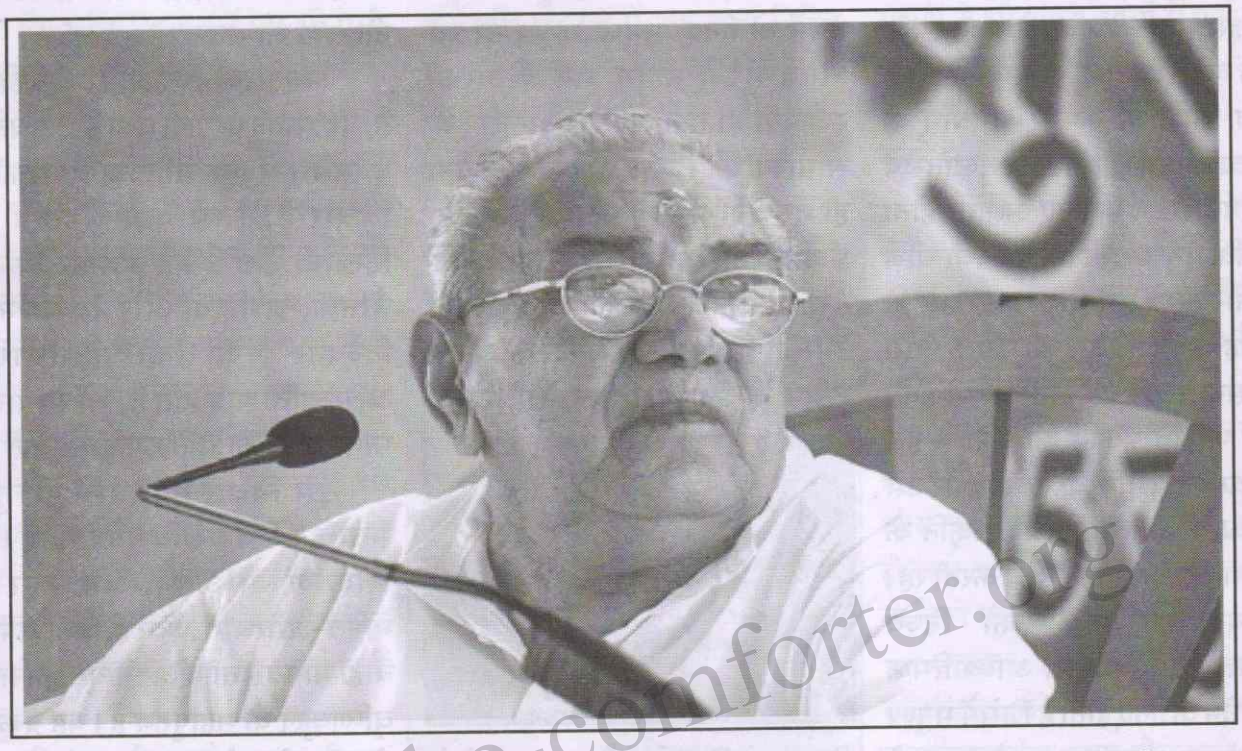

"लोग जिस कार्य को कई जन्मों में होना असंभव बताते हैं, गुरु कृपा से वह परिवर्तन क्षणभर में हो जाता है। मैंने इस प्रकार के परिवर्तन प्रत्यक्ष होते देखे हैं।

मुझे परमसत्ता ने स्पष्ट बताया है कि जिस प्रकार चावल की हांडी में से एक चावल का दाना लेकर देखने से सभी चावलों के पकने का ज्ञान हो जाता है, उसी प्रकार सभी समर्पित लोगों के अंगीकार और न्याय की प्रार्थना का, एक जैसा प्रभाव होता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

भगवान् की अवतरण-प्रणाली

परन्तु अवतार लेने के लिए यह स्वीकृति या यह अवतरण मनुष्य के आरोहण या विकास को सहायता पहुँचाने के लिए ही होता है।

इस बात को गीता ने बहुत स्पष्ट करके कहा है। कहा जा सकता है कि मानव-प्राणी के रूप में भगवान् के प्राकट्य की सम्भावना को दृष्टांतरूप से सामने रखने के लिए अवतार होता है, ताकि मनुष्य देखें कि यह क्या चीज है? और उसमें इस बात का साहस हो कि वह अपने जीवन को उसके जैसा बना सके। और यह इसलिए भी होता है कि पार्थिव प्रकृति की नसों में इस प्राकट्य का प्रभाव बहता रहे और उस प्राकट्य की आत्मा पार्थिव प्रकृति के ऊर्ध्वगामी प्रयास का नेतृत्व करती रहे।

यह जन्म मनुष्य को दिव्य मानवता का एक ऐसा आध्यात्मिक सांचा देने के लिए होता है जिसमें मनुष्य की जिज्ञासु अंतरात्मा अपने-आपको ढाल सके। यह जन्म एक धर्म देने के लिए---कोई संप्रदाय या मत विशेषमात्र नहीं, बल्कि आंतर और बाह्य जीवनयापन की प्रणाली--आत्म-संस्कारक मार्ग, नियम और विधान देने के लिए होता है, जिसके द्वारा मनुष्य दिव्यता की ओर बढ़ सके। चूंकि मनुष्य का इस प्रकार आगे बढ़ना, इस प्रकार आरोहण करना मात्र पृथक् और वैयक्तिक व्यापार नहीं है, बल्कि भगवान् के समस्त जगत्-कर्म की तरह एक सामूहिक व्यापार है। मानवमात्र के लिये किया गया कर्म है इसलिए अवतार का आना मानव-यात्रा की सहायता के लिए, महान् संकट-काल के समय मानवजाति को एक साथ रखने के लिए, अधोगामी शक्तियाँ जब बहुत अधिक बढ़ जायें तो उन्हें चूर्ण-विचूर्ण करने के लिए, मनुष्य के अन्दर जो भगवन्मुखी महान् धर्म है उसकी स्थापना या रक्षा के लिए, भगवान् के साम्राज्य की (फिर चाहे वह कितना ही दूर क्यों न हो) प्रतिष्ठा के लिए, प्रकाश और पूर्णता के साधकों (साधूनां) को विजय दिलाने के लिए और जो अशुभ और अंधकार को बनाये रखने के लिए युद्ध करते हैं, उनके

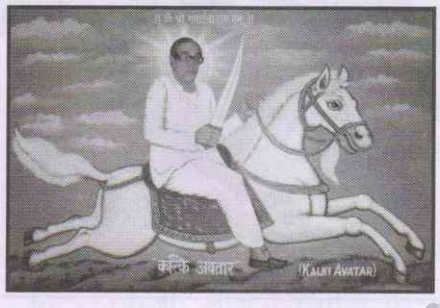
कल्कि अवतार (KALKI AVATAR)

विनाश के लिए होता है। अवतार के ये हेतु सर्वमान्य हैं और उसके कर्म को देखकर ही जनसमुदाय उन्हें विशिष्ट पुरुष जानता और पूजने को तैयार होता है। **केवल आध्यात्मिक मनुष्य ही यह देखा पाते हैं कि अवतार एक चिह्न है,** मानसिक और शारीरिक क्षेत्र में अभिव्यक्त होकर उसे अपने साथ एकता में विकसित करने और उस पर अधिकार करने के लिए अपने-आपको अभिव्यक्त करने वाले सनातन आन्तरिक भगवान् का प्रतीक है।

बाह्य मानवरूप में ईसा, बुद्ध या कृष्ण का जो दिव्य प्राकट्य होता है और मनुष्य के अन्दर भगवान् के चिरंतन अवतार का जो प्राकट्य होता है, दोनों के मूल में एक ही गूढ़ सत्य है। जो कुछ अवतारों के द्वारा इस पृथ्वी के बाह्य मानवजीवन में किया गया है, वह समस्त मानव-प्राणियों के अन्दर दोहराया जा सकता है।

अवतार लेने का यही उद्देश्य होता है, पर इसकी प्रणाली क्या है? अवतार के संबंध में एक यौक्तिक या संकीर्ण विचार है, जिसे केवल इतना ही दिखायी देता है कि अवतार किन्हीं नैतिक, बौद्धिक और क्रियात्मक दिव्यतर गुणों की असाधारण अभिव्यक्ति मात्र होते हैं, जो साधारण मानवजाति का अतिक्रमण कर जाते हैं।

इस विचार में अवश्य ही कुछ सत्य है। अवतार विभूति भी हैं। ये श्रीकृष्ण जो अपनी अंतःसत्ता में मानव-शरीरधारी ईश्वर हैं, वे ही अपनी बाह्य मानवसत्ता में अपने युग के नेता, वृष्णिकुल के महापुरुष हैं। यह प्रकृति के दृष्टिकोण से है, आत्मा की दृष्टि से नहीं। भगवान् अपने-आपको प्रकृति के अनन्त गुणों में प्रकट करते हैं और इस प्राकट्य की तीव्रता उन गुणों की शक्ति और सिद्धि से जानी जाती है। इसलिए भगवान् की विभूति, नैयक्तिक भाव से उनके गुणों की अभिव्यक्त शक्ति है, वह उनका बहिःप्रवाह है चाहे ज्ञान के रूप में हो अथवा शक्ति, प्रेम, बल या अन्य किसी रूप में; और वैयक्तिक भाव से यह वह मनोमय रूप और सजीव सत्ता है जिसमें वह शक्ति सिद्ध होती और अपने महत् कर्म करती है।

संदर्भ-श्री अरविन्द रचित
'गीता प्रबंध' पुस्तक से

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

पूर्ण ज्ञान का योग

ज्ञान का लक्ष्य

-महर्षि श्री अरविन्द

निश्चलता की परमोच्च अवस्था कर्म से सर्वथा विपरीत है, अतएव, यह उन लोगों को नहीं प्राप्त हो सकती जो आग्रहपूर्वक कर्मों में लगे रहते हैं, यहाँ तक कि भक्ति, पूजा एवं प्रेम भी ऐसी साधनाएँ हैं जो अपरिपक्व आत्मा के ही योग्य हैं।

अधिक-से-अधिक ये अज्ञान की ही सर्वोत्तम विधियाँ हैं। कारण, ये-भक्ति, प्रेम आदि...हमसे भिन्न किसी अन्य, उच्चतर एवं महत्तर वस्तु को अर्पित किये जाते हैं; किन्तु परम ज्ञान में ऐसी किसी वस्तु का अस्तित्व नहीं हो सकता, क्योंकि वहाँ या तो केवल एक ही सत्ता होती है या फिर कोई भी सत्ता नहीं होती और इसलिये या तो वहाँ पूजा करने और प्रेम एवं भक्ति की भेंट चढ़ानेवाला कोई नहीं होता या फिर इसे ग्रहण करनेवाला ही कोई नहीं होता।

निश्चय ही, वहाँ चिन्तन-क्रिया भी तदात्मता या शून्यता की अनन्य चेतना में विलुप्त हो जाती है और अपनी निश्चलता के द्वारा सम्पूर्ण प्रकृति को भी निश्चल बना देती है। तब या तो केवल निरपेक्ष एकमेव रह जाता है या फिर सनातन शून्य।

यह शुद्ध ज्ञानयोग बुद्धि के द्वारा साधित होता है, यद्यपि इसकी परिणति बुद्धि और उसकी क्रियाओं के अतिक्रमण में ही होती है। हमारे अन्दर का विचारक हमारी गोचर सत्ता के अन्य सभी भागों से अपने-आपको पृथक् कर लेता है, हृदय का बहिष्कार कर देता है, प्राण और इन्द्रियों से पीछे हट जाता है, शरीर से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेता है, ताकि वह उस वस्तु में अपनी ऐकान्तिक परिपूर्णता प्राप्त कर सके जो उससे तथा उसके कार्य-व्यापार से भी परे है। इस मनोवृत्ति के मूल में एक सत्य निहित है, इसी प्रकार एक ऐसा अनुभव भी है जो इसे उचित सिद्ध करता प्रतीत होता है। सत्ता का एक 'परम सार' है जो अपनी प्रकृति से ही निश्चल है, मूल सत्ता के अन्दर एक परम नीरवता है जो अपने विकास और परिवर्तनों से

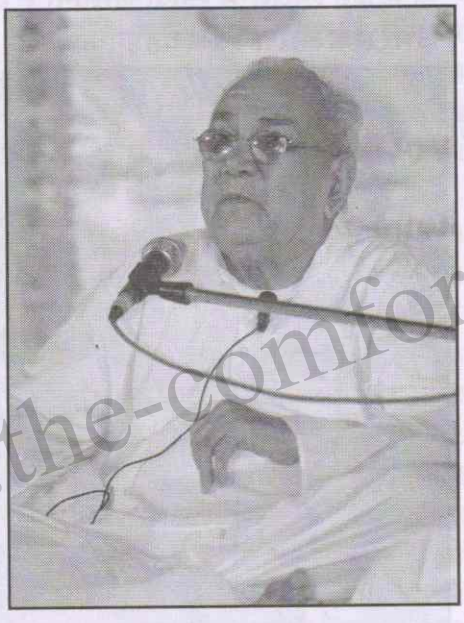

परे है, जो निर्विकार है और अतएव उन सब क्रिया-प्रवृत्तियों से उच्चतर है जिनका वह, अधिक-से-अधिक, एक 'साक्षी' है। और, हमारे आभ्यन्तरिक व्यापारों की क्रम परम्परा में विचार एक प्रकार से इस आत्मा के निकटतम है, कम-से-कम इसके उस सर्व-सचेतन ज्ञाता-रूप के निकटतम है जो सब क्रियाओं पर अपनी दृष्टि डालता है, पर उन सबसे पीछे हटकर स्थित हो सकता है। हमारा हृदय और संकल्प तथा हमारी अन्य शक्तियाँ मूलतः क्रियाशील हैं, वे स्वभाववश ही कार्य करने में प्रवृत्त होती हैं तथा उसके द्वारा अपनी पूर्ण चरितार्थता प्राप्त करती हैं, यद्यपि वे भी अपने कार्यों में पूर्ण तृप्ति लाभ करके या फिर इससे उल्टी प्रक्रिया के द्वारा निश्चलता को प्राप्त करने में अधिक समर्थ हैं।

विचार इस नीरव साक्षी आत्मा को, जो हमारी सभी क्रियाओं से उच्चतर है, एक आलोकित बौद्धिक अनुभव के द्वारा जानकर अधिक आसानी से सन्तुष्ट हो जाता है। और, एक बार उस अचल आत्मा के दर्शन कर लेने पर, सत्यान्वेषण के अपने ध्येय को पूरा हुआ समझकर, शान्त हो जाने तथा स्वयं भी अचल बन जाने के लिये उद्यत रहता है।

कारण, अपनी अत्यन्त विशिष्ट गतिविधि में, यह स्वयं कर्म में उत्सुकतापूर्वक भाग लेनेवाले तथा रागपूर्वक श्रम करनेवाले की अपेक्षा कहीं। अधिक वस्तुओं का एक निष्पक्ष साक्षी, निर्णायक एवं निरीक्षक बनने की प्रवृत्ति रखता है, और आध्यात्मिक या दार्शनिक स्थिरता एवं निर्लिप्त पृथक्ता, अत्यन्त सहज रूप से, प्राप्त कर सकता है।

और, क्योंकि मनुष्य मनोमय प्राणी है, उसके अज्ञान को आलोकित करने के लिये विचार उसका सच्चे रूप में सर्वोत्तम एवं उच्चतम साधन न सही, पर कम-से-कम एक अत्यन्त स्थिर, सामान्य और प्रभावपूर्ण साधन अवश्य है।

संदर्भ-'योग समन्वय'
पुस्तक पृष्ठ-289

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

योग के बारे में

वह स्वास्थ्य और स्वास्थ्य-विज्ञान के लिये जितना अधिक प्रयास करता है, उतना ही वह मन और शरीर की बीमारियों और पागलपनों को बढ़ाती है। मनुष्य ने अतिप्राकृतिकता पर विजय प्राप्त की है। उसने उसे भौतिक, मानव और बौद्धिक के साथ बाँध दिया है। वह भयंकर रूप से तुरन्त दानवाकार अतिप्राकृतिकता और पुनरुद्धार के अकल्पित रूपों में फूट पड़ती है।

वह जो काम करने पर तुली हो, उसमें वह सीमित मानव तर्क-बुद्धि के रोकने से न रुकेगी। अपनी सारी विशाल सत्ता में वह एक अतिप्राकृतिक शक्ति का स्पन्दन, भौतिक तर्क-बुद्धि से श्रेष्ठतर ज्ञान की क्रिया और प्रयास का अनुभव करती है। वह फट पड़ती है, इसलिये वह बाधित करती है, वह आग्रह करती है।

हर जगह हम देखते हैं कि वह अपने ही बनाये हुए मानसिक, नैतिक और भौतिक प्ररूप को तोड़ने पर उतारू है और उनके परे किन्हीं नयी प्रक्रियाओं की ओर जाने की कोशिश में लगी है, जिन्हें अभी तक स्पष्ट रूप से नहीं जाना गया है। वह जानबूझकर हमारे सामान्य बौद्धिक नैतिक और भौतिक प्रकार की सत्ताओं के अच्छे स्वास्थ्य और सन्तुलन पर आक्रमण करती है।

उसके अंदर विशाल आकारों का पागलपन भी है, विशाल रचनाएँ, विशाल संयोजन, विशाल ऊँचाइयाँ और गतियाँ, विशाल स्वप्न और महत्वाकांक्षाएँ, प्रायः सभी जगह कम या अधिक स्पष्ट रूप से, कम या अधिक धुंधले रूप में प्रस्तुत दिखलायी देती हैं।

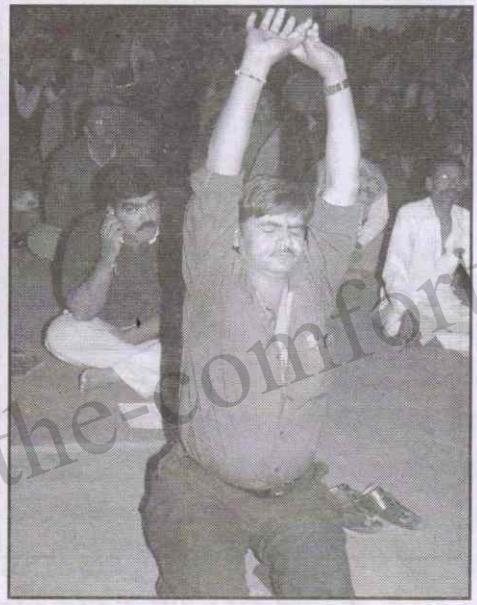

अभी तक वह व्यष्टि के अंदर अपनी इच्छा पूरी नहीं कर पाती। वह जन समूहों पर क्रिया करती है, मन में नहीं कर पाती तो भौतिक रूपों और अन्वेषणों पर, यथार्थ में असमर्थ होने के कारण आशाओं और स्वप्नों में, नैपोलियन और अति नैपोलियन पैदा करने में या उनकी नकल करने में असमर्थ होने के कारण वह सामान्य मानव क्षमता को, पहुँच को ज्यादा ऊँचा बनाती है जिससे वे ज्यादा आसानी से उभर सकें और तब तक वह इनके बदले

युद्ध-पोत और अति-युद्धपोतों का निर्माण करती है। न्यास और विशालकाय व्यापार संघ, दूर से विनाश करने वाली चीजों के अन्वेषण दल का निर्माण करती है और ऐसा लगता है कि वह स्वयं अपनी बनायी हुई देश और काल की सीमाओं को कुचलकर टुकड़े-टुकड़े कर डालने के लिये उत्सुक और उन्मत्त हो रही है। वह जो करना चाहती है, मानो उसकी ओर अंगुलि-निर्देश करने के लिये उसने इस तोड़ने और फिर बनाने की प्रक्रिया के लक्षणों को प्रतिभा के तथ्य में इकट्ठा कर दिया है। अब यह सामान्य रूपसे जानी हुई बात है कि मानव जाति में ऐसी प्रतिभा मुश्किल से ही प्रकट होती है जिसमें उसे धारण करनेवाले व्यक्तिगत शरीर, प्राण शक्ति और मन में असाधारणताओं का पुट, उनकी तैयारी, उनका संग न हो अथवा जिस वंशानुक्रम ने उसे पैदा किया है, उसमें ह्रास, उन्माद या सनक न हो अथवा वह जिस मानव परिवेशमें आयी है उसमें अव्यवस्था या असाधारणता न हो।

इस आधार पर चमकीले सामान्य नियम बनाने की जल्दबाजी इस विरोधाभास की स्थापना करती है कि प्रतिभा अपने-आप ही पागलपन या ह्रास का एक रुग्ण तथ्य है। इसका सच्चा स्पष्टीकरण काफी स्पष्ट है।

मानव तन्त्र में प्रतिभा को स्थापित करने के लिये प्रकृति उस तन्त्र को आंशिक रूप से तोड़ने और उसमें गड़बड़ पैदा करने के लिये बाधित होती है क्योंकि वह उसमें एक ऐसे तत्त्व को प्रविष्ट कर रही है, जो उस जाति के लिये पराया और उससे श्रेष्ठ है और उसे अधिक समृद्ध बनाता है।

प्रतिभा उस नूतन और दिव्य तत्त्व का पूर्ण विकास नहीं है। यह केवल उसका आरम्भ या अपने उच्चतम रूप में किन्हीं दिशाओं में उसका उपगमन है। वह कुछ अव्यवस्थित मानव मन, प्राणिक स्नायविकता, भौतिक पशुता की बृहत् राशि में अनिश्चित,

❖❖❖

संदर्भ-श्री अरविन्द, 'मानव से अतिमानव की ओर' पुस्तक से... क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव का प्रवचन

नशों से छुटकारा

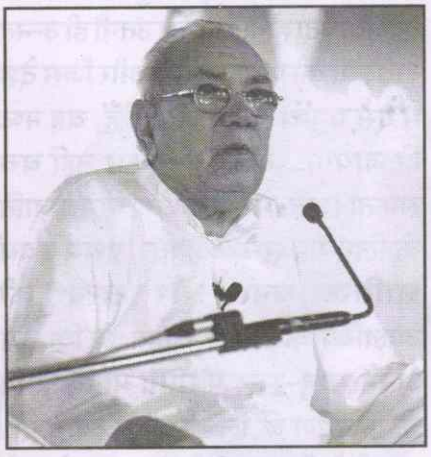

अब दूसरा, आज जो संसार को सबसे ज्यादा परेशान कर रहा है-वह है नशा और पश्चिम इससे सबसे ज्यादा परेशान है। मेरे पास डेनमार्क से लड़का लड़की आए, दो औरतें लन्दन से आई और दीक्षा लेकर गई। उन्होंने कहा नशा हमको मारेगा। यह छूटता ही नहीं है। भौतिक साइन्स (विज्ञान) वाले शराब छुड़ाते हैं, अस्पताल में भर्ती करते हैं, दो-तीन महीने रहता है। जब शाम को शराब माँगता है तो उससे कोई ऐसी ड्रग डाल कर देते हैं, उसे पीने से जी मचलाता है और उल्टी होती है। इस तरह 2-3 महीने में छोड़ता है और बाहर निकलते ही पहले से दुगुणा शुरू कर देता है, पार नहीं पड़ रही है। इसमें (सिद्धयोग में) तो आन्तरिक परिवर्तन आ जाता है, जिस चीज की खुशबू आती थी, बदबू आने लग जाती है, आप निगल नहीं सकोगे, माँग खत्म हो जाती है, अन्दर से।

अब देखिए! मनुष्य जाति तीन प्रकार की होती हैं- रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण। त्रिगुण-मयी माया से सृष्टि की उत्पति हुई। हर एक मनुष्य में तीनों वृत्तियों होती हैं। एक प्रधान होती है, दो गौण होती हैं। किसी में तमोगुण ज्यादा, किसी में रजोगुण ज्यादा, किसी में सतोगुण ज्यादा और जो वृत्ति प्रधान होती है, वह जो अन्दर माँग करती है, वह ही सप्लाई (पूर्ति) करना पड़ता है। किसी आदमी को कुछ पसन्द होता है, खाने को, किसी को कुछ होता हैं। अलग-अलग Choice (पसंद) होती है। वह जो अन्दर वृत्ति सक्रिय है, वह जो माँगेगी तो आपको सप्लाई करना पड़ेगा और झगड़ा जब पैदा हो जाता है-डिमाण्ड (माँग) हो, सप्लाई (पूर्ति) न हो। जब डिमांड ही नहीं तो सप्लाई क्यूँ? तो आपकी इच्छा ही नहीं होगी। 20-20 साल के अफीमची आये, आज खाया कल से बंद, नहीं खाने से कोई तकलीफ नहीं है। तकलीफ उस हालत में होती है, जब अन्दर वृत्ति चेतन है, माँग कर रही हैं। आप उसको दे नहीं रहे हो, वह नशा करने वाला उसे दुःखी होता हैं तो इस नाम जप और ध्यान से आप की वृत्तियाँ बदल जाएँगी।

देखिए! गीता में 17वें अध्याय में 3 श्लोक है 8,9,10 उसमें भगवान् ने अलग-अलग वृत्ति के आदमी के क्या-क्या खान-पान है? तामसिक कौनसा खानपान पसन्द करता है? कौनसा राजसिक और कौनसा सात्विक। वह स्पष्ट रूप से वर्णन किया है कि इस वृति का आदमी यह चीज पसन्द करता है, इसका यह पसन्द करता है और गीता में 14वें अध्याय में एक श्लोक हैं 10वाँ, उसमें भगवान् ने कहा है कि यह वृत्तियाँ बदली जा सकती है। तमोगुण और रजोगुण को दबा दो तो सतोगुण उभरेगा, इन दोनों को दबा दो तो तीसरा उभरेगा तो इस प्रकार जो आराधना करोगे, उससे आपकी वृत्तियाँ बदल जाएँगी। वृत्तियाँ बदलने के साथ-साथ खान-पान जो पहले पसन्द था, उससे घृणा हो जाएगी।

चाहकर बुद्धि के प्रयास से आप उसको नहीं रोक सकते। बुद्धि के प्रयास से अगर नशा छूटे तो फँसने के बाद सभी छोड़ना चाहते हैं। पहले तो सीख लेंगे-शौक-शौक में, फिर फँस गये, छोड़ नहीं सकते, तब तक नहीं छूटेगा, जब तक वृत्ति नहीं बदलेगी। मैंने हजारों को अफीम और शराब छुड़वा दी। पता नहीं शराब तो लाखों के छूट गया होगा।

अगर आप Seriously (गंभीरता से) नाम जपोगे तो निश्चित रूप से सभी नशे छूट जाएंगे। नशे आपको छोड़ जाएंगे, आप नहीं छोड़ोगे। उनको नशे की बात करता हूँ तो स्वामी विवेकानन्द जी का एक Sentence (वाक्य) याद आ जाता है। अमेरिका में उन्होंने कहा 'महाराज लम्बे चौड़े लेक्चर जाड़ रहे हो, आपके हमारे सोदा नहीं बैठ रहा, आप के धर्म में शाहाकारी और माँसाहारी बड़ा सख्त सिद्धान्त है।

हम सारे के सारे माँस खाने वाले लोग तो स्वामी जी ने चलते Speech (प्रवचन) में कह दिया-You need not to give up the things; the thigs will give up you. मतलब **"आपको उन वस्तुओं को छोड़ने की आवश्यकता नहीं हैं, वे वस्तुएँ आपको छोड़कर चली जाएगी"**, फिर क्या करोगे? तो आप में जो परिवर्तन आएगा, जो इस नाम जप से The things will give up के हिसाब से आएगा, न कि बुद्धि के प्रयास से। इसलिए मैं कहीं कह दिया करता हूँ, शराब पी रहे हो तो एक की जगह डेढ़ बोतल शुरू कर दो, मत छोड़ो। अफीम थोड़ा ज्यादा लेना शुरू कर दो, लोग तो कहते हैं-छोड़ दो, मैं तो कहता हूँ, मत छोड़ो।

मगर नाम को मत भी छोड़ो तो फिर कितने दिन करोगे? चैलेंज के साथ मैंने लाखों को छुड़वा दिया। अगर नाम जप Seriously करोगे, नशा आपको छोड़ जाएगा, इसमें कोई आश्चर्य नहीं है।

-समर्थ सद्गुरुदेव
श्री रामलाल जी सियाग

क्रमशः अगले अंक में...

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

!! मेरे गुरुदेव !!

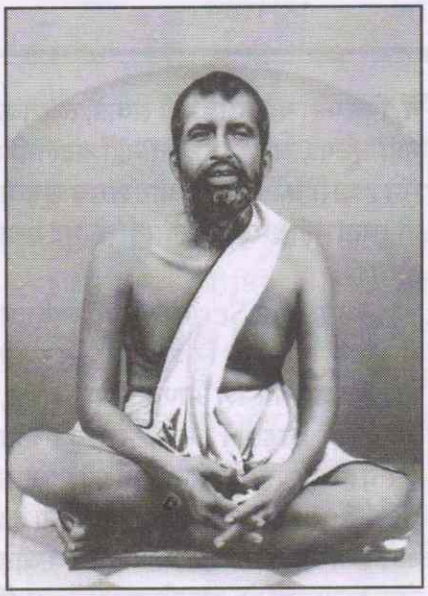

उनका सन्देश तथा उनके विचार ऐसे बहुत थोड़े लोगों को ज्ञात थे, जो उनका प्रचार कर सकते। अन्य लोगों के अतिरिक्त वे कुछ युवक बालकों को, जो संसार में अपना सब कुछ छोड़ चुके थे तथा उनका कार्य चलाने को तैयार थे, अपने पीछे छोड़ गये।

उनका दमन करने की चेष्टा लोगों ने की, परन्तु मेरे गुरुदेव के असामान्य जीवन द्वारा उनके हृदय में जो स्फूर्ति भर गयी थी, उसके कारण वे अचल बने रहे। वर्षों से उस परम मंगल विभूति के सहवास के कारण उन्होंने अपना मार्ग नहीं छोड़ा। ये नवयुवक जिस नगर में पैदा हुए थे, उसी की गलियों में भिक्षाटन करते हुए अपना कार्य करते रहे, यद्यपि उनमें से कई बड़े उच्च घरानों के थे।

प्रथम तो उन्हें तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा, परन्तु उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा और धीरे धीरे उन महापुरुष के दिव्य सन्देश वे भारत में दिन-प्रतिदिन फैलाने लगे; यहाँ तक कि सारा देश मेरे गुरुदेव के उपदेशों से गूँज उठा। बंगाल प्रान्त के एक दूर गाँव में पैदा हुए इन महापुरुष ने, जिन्हें पाठशाला में शिक्षा भी नहीं मिली थी, केवल अपने **दृढ़ निश्चय से सत्य की उपलब्धि की तथा उसे दूसरों को प्रदान किया,** और उसे जीवित रखने के लिए वे कुछ थोड़े से नवयुवक छोड़ गये।

आज श्री रामकृष्ण परमहंस का नाम भारत में लाखों पुरुषों को ज्ञात है। इतना ही नहीं, वरन् उस महापुरुष की शक्ति भारत के बाहर भी फैल गयी है और इस संसार में सत्य के सम्बन्ध में अथवा आध्यात्मिक ज्ञान के बारे में यदि मैं कहीं एक शब्द भी कभी बोला हूँ तो उसका सारा श्रेय मेरे गुरुदेव को है...भूलें केवल मेरी हैं।

आधुनिक संसार के लिए श्री रामकृष्ण का सन्देश यही है-मतवादों, आचारों, पंथों तथा गिरजाघरों एवं मन्दिरों की चिंता न करो। प्रत्येक मनुष्य के भीतर जो सार वस्तु अर्थात् आत्म-तत्त्व विद्यमान है, इसकी तुलना में ये सब तुच्छ हैं, और मनुष्य के अन्दर यह भाव जितना ही अधिक अभिव्यक्त होता है, वह उतना ही जगत् कल्याण के लिए सामर्थ्यवान हो जाता है। प्रथम इसी धर्म-धन का उपार्जन करो, किसी में दोष मत ढूँढो, क्योंकि सभी मत, सभी पंथ अच्छे हैं।

अपने जीवन द्वारा यह दिखा दो कि धर्म का अर्थ न तो शब्द होता है, न नाम और न सम्प्रदाय, वरन् इसका अर्थ होता है-आध्यात्मिक अनुभूति। जिन्हें अनुभव हुआ है, वे ही इसे समझ सकते हैं। जिन्होंने धर्मलाभ कर लिया है, वे ही दूसरों में धर्मभाव संचारित कर सकते हैं, वे ही मनुष्य जाति के श्रेष्ठ आचार्य हो सकते हैं--केवल वे ही ज्योति की शक्ति हैं।'

जिस देश में ऐसे मनुष्य जितने ही अधिक पैदा होंगे, वह देश उतनी ही उन्नत अवस्था को पहुँच जायेगा और जिस देश में ऐसे मनुष्य बिल्कुल नहीं हैं, वह नष्ट हो जायेगा...वह किसी प्रकार नहीं बच सकता। अतः मेरे गुरुदेव का मानव जाति के लिए यह सन्देश है कि **'प्रथम स्वयं धार्मिक बनो और सत्य की उपलब्धि करो।'** वे चाहते थे कि तुम अपने भ्रातृ-स्वरूप समग्र मानव जाति के कल्याण के लिए सर्वस्व त्याग दो। उनकी ऐसी इच्छा थी कि भ्रातृ-प्रेम के विषय में बातचीत बिल्कुल न करो, वरन् अपने शब्दों को सिद्ध करके दिखाओ। **त्याग तथा प्रत्यक्षानुभूति का समय आ गया है,** और इनसे ही तुम जगत् के सभी धर्मों में सामंजस्य देख पाओगे। तब तुम्हें प्रतीत होगा कि आपस में झगड़े की कोई आवश्यकता नहीं है और तभी तुम समग्र मानव जाति की सेवा करने के लिए तैयार हो सकोगे। इस बात को स्पष्ट रूप से दिखा देने के लिए कि सब धर्मों में मूल तत्त्व एक ही है, मेरे गुरुदेव का अवतार हुआ था।

अन्य धर्म-संस्थापकों ने स्वतन्त्र धर्मों का उपदेश दिया था और वे धर्म उनके नाम से प्रचलित हैं; परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी के इन महापुरुष ने स्वयं के लिए कोई भी दावा नहीं किया। उन्होंने किसी धर्म को क्षुब्ध नहीं किया, क्योंकि उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव कर लिया था कि वास्तव में सब धर्म एक ही चिरन्तन धर्म के अभिन्न अंग हैं।

संदर्भ-विवेकानन्द साहित्य-7

समाप्त

"मेरे लिए तो 'गुरु' ही सर्वोपरि है।"

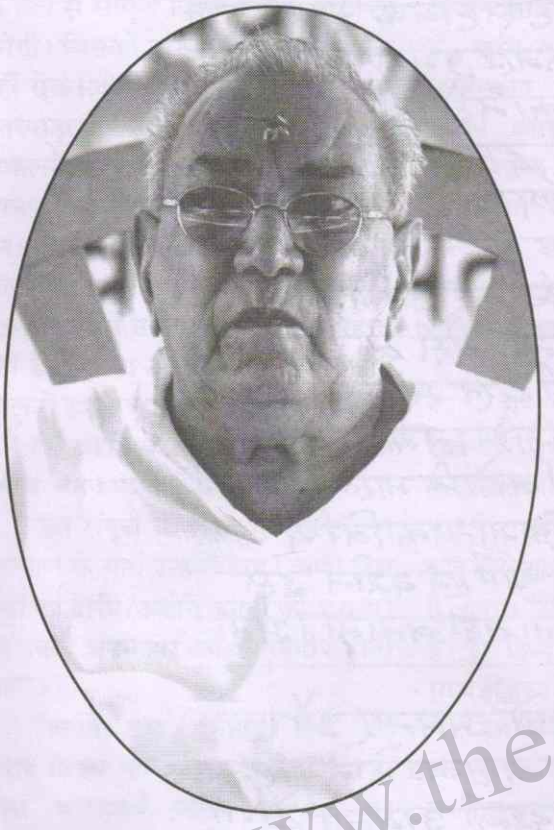

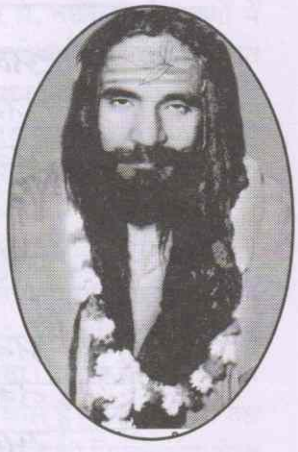

कुण्डलिनी जाग्रत होकर सहस्रार में पहुँच जाती है, उसी का नाम 'मोक्ष' है। इसमें तीन बंध लगते हैं। मूलाधार (Sacrem) में साढ़े तीन आटे (फेरे) लगाकर, कुण्डलिनी सुषुप्त अवस्था में रहती है। गुरु कृपा से ही कुण्डलिनी जाग्रत होती है। योग में पाँच प्रकार के वायु होते हैं-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। आजकल जितने भी गुरु हैं, उनका कोई गुरु नहीं है। वे अपने गुरु को साथ नहीं रखते। मैं अपने गुरु को हमेशा साथ रखता हूँ (दादा गुरुदेव के चित्र की ओर इशारा करते हुए), मेरे फोटो के साथ हमेशा मेरे गुरुदेव का फोटो रहता है। **मेरे अंदर जो परिवर्तन आया, मेरे गुरु की कृपा से आया है।** मेरे गुरुदेव शिव के अवतार है। यहाँ (आज्ञाचक्र) पर गुरु का ध्यान करते हैं। **मेरे लिए तो 'गुरु' ही सर्वोपरि है।** मेरी तस्वीर से ध्यान लगता है, राम और कृष्ण की तस्वीर से ध्यान नहीं लगता।

गुरु कब प्रसन्न होता है?

गुरु, धन-दौलत देने या चढ़ावा चढ़ाने से प्रसन्न नहीं होता-**बल्कि साधक जब आराधना में आगे बढ़ता है तो गुरु प्रसन्न होता है।**

धन-दौलत, रुपया-पैसा सब कुछ यहीं रह जाता है, केवल आराधना ही साथ में रहती हैं, आराधना ही साथ जाती है। अब यहाँ (आज्ञाचक्र) पर मुझे देखो और 15 मिनट ध्यान करो। मेरी तस्वीर से ही ध्यान लगता है।

-समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग
रविवार 3 जून 2012

www.the-comforter.org

गतांक से आगे...

सद्गुरुदेव की दिव्य लेखनी से...

21 वीं सदी का भारत

उपरोक्त से स्पष्ट होता कि वह सहायक ईश्वर का अवतार होगा। प्रभु के नाम से तो केवल प्रभु कार ही अवतरण हो सकता है, और किसी का नहीं। क्यों कि अवतारों की पुण्य भूमि भारत ही है, इस लिए बाइबल में वर्णित सहायक भारत की पुण्य भूमि पर अवतरित हो चुका है।

उपरोक्त में यीशु ने भी स्पष्ट कहा है कि उस अवतार को जब तक आप "धन्य" नहीं कहोगे, तब तक तुम मुझे फिर कभी नहीं देख सकोगे। इससे स्पष्ट होता है कि वह सहायक अनिश्चित काल तक के भूत काल को दिखाएगा, सुनाएगा। क्योंकि भारतीय योगदर्शन में ही इस ज्ञान को प्राप्त करने की क्रियात्मक विधि बताई गई है, संसार का कोई धर्म एवं दर्शन इस ज्ञान को प्राप्त करने का कोई रास्ता नहीं बताता। अतः वह सहायक वेदान्ती ही है।

क्योंकि हिन्दू दर्शन के दशवें अवतार और बाइबल में वर्णित सत्य के आत्मा के प्रकट होने का समय आ गया। हिन्दू जिसे मानेंगे वही दशवाँ अवतार होगा, और ईसाई जिसे मानेंगे, वही सत्य का आत्मा।

परन्तु बाइबल के यशायाह 43: 8 एवं 9 में जो कुछ कहा गया है, उससे तो यही झलक मिलती है कि वह एक ही व्यक्ति होगा, क्योंकि यह फैसला सम्पूर्ण विश्व मिलकर करेगा। और यह फैसला भी अनिश्चित काल तक के भूत-भविष्य के दिखाने-सुनाने के आधार पर ही होगा। जो इस प्रकार है — "आँख रखते हुए अन्धों को और कान रखते हुए बहरों को निकाल ले आओ। जाति-जाति के लोग इकट्ठे किए जाएँ और राज्य-राज्य के लोग एकत्रित हों। उनमें से कौन यह बात बता सकता है व बीती हुई बातें हमें "सुना सकता है"? वे अपनी साक्षी ले आएँ जिससे वे सच्चे ठहरें, वे सुनलें और कहें, यह सत्य है।

क्रमशः अगले अंक में...

भारत में कभी भी राजनीतिक स्थिरता नहीं आएगी जब तक वे लोग भारत की असली आत्मा को नहीं समझेंगें ।

लेकिन इस भूमण्डल पर अवतरित भागवत शक्ति शीघ्र ही पुरातन-सनातन धर्म की सभ्यता और संस्कृति को सिद्धयोग के बल से सम्पूर्ण विश्व में पुनः स्थापित करेगी। जिसको दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकेगी। श्री अरविंद ने बंगाल के उत्तरपाड़ा नामक जगह पर अलीपुर जेल से निकलने के बाद 1908 में अपना पहला भाषण दिया जिसमें-भारत में भगवान् के पुनः अवतरण व स्वर्ण और रूपान्तरित भारत की झांकी, स्पष्ट दिखाई देती हैं- ''हमारे धर्म में उच्चारण को उतना महत्त्व नहीं है, जितना आचरण को है। प्राचीन काल में हमारे ऋषि-मुनि गहन अरण्यों में रहते थे। वहाँ एकांतवास में वे वर्षों तक चिंतन-मनन करते थे।

उस संपूर्ण मानवता के वास्तविक कल्याण के मार्ग उन्होंने देखे। वाणी द्वारा उन्हीं का दर्शन, उन्होंने जनता को कराया। इस प्रकार अपने इस धर्म का निर्माण होता रहा''' ।

'अपने इस सनातन धर्म का प्रचार विश्व भर में करने के लिये ही आज भारतवर्ष जाग्रत हो रहा है। संपूर्ण विश्व के सुख के लिये ही भारत-वर्ष का उत्थान हो रहा है। संध्याकाल में हमारे देश की जागृति केवल हमारे सुख के लिये नहीं हैं। दूसरों को कुचलने के लिये तो वह निश्चित ही नहीं है। चिरंतनकाल से भारतवर्ष ने संपूर्ण मानव जाति का हित करने की आकांक्षा ही अपने हृदय में संजोई है।

'भारत के उत्थान का अर्थ है, हमारे सनातन धर्म का उत्थान। भारत की महानता का अर्थ है, हमारे सनातन धर्म की महानता। परमेश्वर ने इस विश्व में धर्म संस्थापन करने के लिये ही भारतवर्ष की योजना की है। हमारा धर्म चिरकालिक धर्म है। वह विश्व के सब देशों को, सब कालों में उपकारक है। दुनिया में यही एक धर्म है, जो अपने उपासकों को भगवान् के निकट ले जाता है, और उनसे प्रत्यक्ष भेंट कराता है। सत्य का वास्तविक आग्रह यही धर्म कराता है। सत्य का वास्तविक मार्ग यही धर्म दिखाता है। हमारा धर्म कहता है, कि भगवान् केवल मानवों में नहीं ,वे पशु-पक्षियों में, कृमि कीटकों में, घट-घट में और कण-कण में विराजमान है। करने, कराने वाला सब कुछ भगवान् हैं। ऐसी महान श्रद्धा केवल हमारा धर्म ही प्रस्थापित करता है। हमारा धर्म हमें मृत्यु के उस पार ले जाता है, और अमरता से साक्षात्कार कराता है। दुनिया में इस ढंग का यही एक धर्म है''' ।'

'राष्ट्रीयता का मतलब केवल राजनीति से नहीं है। राष्ट्रीयता का मतलब है-हमारा धर्म । राष्ट्रीयता ही हमारा उपासना पंथ है। राष्ट्रीयता ही हमारी श्रद्धा है। यही बात दूसरे शब्दों में इस प्रकार कही जा सकती है। हमारा सनातन धर्म ही हमारी राष्ट्रीयता है।' इस हिन्दू राष्ट्र का जन्म सनातन धर्म के साथ ही हुआ है। सनातन धर्म की छत्र-छाया में ही इस हिन्दू राष्ट्र का प्रत्येक चाल-ढाल और प्रत्येक व्यापार विकसित हुआ है। इस सनातन धर्म के मार्गदर्शन में ही हिन्दू राष्ट्र का विकास सुनिश्चित है।

'जब कभी यह राष्ट्र अपने सनातन धर्म से दूर हटेगा, तब इसका अधःपतन होगा और यदि किसी समय सनातन धर्म का विनाश संभव हो तो समझ लीजिए कि उसके साथ-साथ इस राष्ट्र का विनाश भी अटल है। सनातन (हिन्दू धर्म) ही भारत की राष्ट्रीयता है। प्रभु ने मुझे कारागार में ही आदेश दिया है।' महर्षि ने और भी सटीक बात कही कि जब तक हम गंभीर होकर इस आराधना को नहीं करेंगे, तपस्या नहीं करेंगे, तब तक हम सफल नहीं हो सकेंगे-

''बंकिमचन्द्र चटर्जी का वन्दे-मातरम् गीत हम केवल ऊपरी भाव से गाते हैं। जिस दिन वह हमारे हृदय में गहरा पैठेगा, उसी दिन हमें माता के दर्शन होंगे। उसी क्षण हमारे अंतःकरण में स्वदेश प्रेम तथा बंधुभाव का उदय होगा। स्वदेश ही मेरी माता है। स्वदेश ही मेरा परमेश्वर है। यह हमारे वेदान्त धर्म की शिक्षा है। हमारे राष्ट्रीय उद्धार का बीज इसी शिक्षा में है। प्रत्येक मनुष्य, परमेश्वर का अंश है। तीस कोटि भारतवासियों की जननी हमारी हिन्द माता है। उसकी पूजा और सेवा करने से, तथा उसके चरणों में आत्म समर्पण करने से ही, हमारा व्यक्तिगत एवं राष्ट्रीय उत्थान निहित है।'

आज हमारा संपूर्ण देश तमोगुण से घिर गया है। हमें उस तमोगुण को हटाकर सतोगुण को प्रस्थापित करना होगा। हमारे लिये दूसरा तरुणोपाय नहीं है। उसके लिए हमें अंतर्मुखी बनना पड़ेगा। उसके लिये हमें उग्र तपश्चर्या करनी होगी तथा **ब्रह्मतेज प्राप्त करना होगा।** हर किसी अंतःकरण में नारायण का वास है। जब तक हम उस सर्वभूतस्थ नारायण की निष्ठापूर्वक सेवा नहीं करते, तब तक न हम सतोगुणी बन पायेंगे और न हमें ज्ञान बल का लाभ होगा। सर्व प्रथम हमें इस सामर्थ्य की प्राप्ति करनी होगी। हमारा नेता केवल राजनीतिज्ञ होने से काम नहीं चलेगा। जब तक आध्यात्मिक शक्ति की नींव सुदृढ़ नहीं है, तब तक राजनीति का मंदिर खड़ा नहीं हो सकेगा। समर्थ रामदास और छत्रपति शिवाजी-दोनों एकरूप हो जाय, इसकी आज आवश्यकता है।''

इन दो देवदूतों ने, भारत के भविष्य का जो रेखाचित्र दुनिया के सामने खींचा था, जो भविष्यवाणी की थी, वही दर्शन आज सद्गुरुदेव सियाग के माध्यम से मानव जाति में मूर्तरूप ले रहा है। स्वामीजी ने भारत के भविष्य के बारे में कहा था कि- सौ साल बाद भारत धर्म व दर्शन की परिभाषा सम्पूर्ण विश्व को समझा देगा और यह कार्य शुरू हो गया। अब ऐसा दिव्य उत्थान होगा, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती ! क्या आप इस दिव्य उत्थान के लिए होने वाली **'क्रांति'** के सच्चे यंत्र बनना चाहोगे ? यह आपको तय करना है !

- संपादक

क्या एक निर्जीव चित्र, सजीव (मानव) पर प्रभाव डाल सकता है?

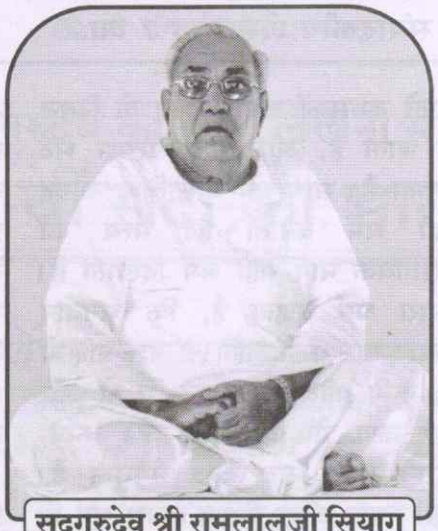

सद्गुरुदेव श्री रामलालजी सियाग

प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? ध्यान करके देखें।

ध्यान की विधि

गुरुदेव सियाग सिद्धयोग आराधना की एक सरल विधि है। इसमें दो कार्य करने होते हैं। सघन नाम (मंत्र) जप व नियमित ध्यान।

आरामदायक स्थिति में बैठकर थोड़ी देर के लिए गुरुदेव के चित्र को एकाग्रता से खुली आँखों से देखें। फिर आँखें बंद करके समर्थ सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी सियाग के चित्र को अपने आज्ञाचक्र पर (जहाँ बिन्दी या तिलक लगाते हैं।) केन्द्रित कर, गुरुदेव से 15 मिनट के लिए ध्यान स्थिर करने की करुण प्रार्थना करें। अब गुरुदेव द्वारा दिये गए संजीवनी मंत्र का मानसिक रुप से सघन जाप करें। (बिना होंठ-जीभ हिलाए)। नाम जप ही ध्यान की चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन मंत्र जप करें।

इस दौरान कोई भी यौगिक क्रिया (आसन, बंध, मुद्रा या प्राणायाम) हो तो घबराएँ नहीं तथा न ही इन्हें रोकने का प्रयास करें। ये क्रियाएँ शारीरिक विकारों को ठीक करने के लिए होती हैं। ध्यान अवधि पूर्ण होते ही सामान्य स्थिति हो जाएगी। इस विधि से सुबह-शाम खाली पेट नियमित रुप से (केवल 15 मिनट) ध्यान करते रहें।

Method of Meditation

Gurudev Siyag Siddha Yoga is an easy to do Spiritual Practise. It includes two things to be done by any seeker ***'Mantra'*** *chanting and* ***'Meditation'****.*

Sit in a comfortable position. See gurudev's image for a while and now close your eyes and try to see Gurudev's image at the centre of your forehead and pray Gurudev for meditation of self for 15 minutes time.

Now mentally chant (without moving your **lips** and **tounge**) Sanjeewani Mantra given by Gurudev. Mantra Chanting is key for Meditation.

Yoga and meditation do not result without **Sanjeewani Mantra**

Chant it round the clock like endless chain of cycle.

During this time if you undergo automatic yogic exercises, then let it happen, don't try to stop them.

After requested time is over, they will stop and you will come in normal position.

Meditation in this way 15 minutes in the morning and evening with empty stomach.

For profound meditation, chant the mantra as much as you can while performing household tasks

www.the-comforter.org

शक्तिपात-दीक्षा

शक्तिपात दीक्षा एक महान् और दिव्य विज्ञान है जिसके द्वारा सिद्धगुरु अपनी दिव्य शक्ति को शिष्य में सीधे संप्रेषित कर, उसकी सुषुप्त शक्ति कुण्डलिनी को जाग्रत करते हैं।

गुरु शिष्य परम्परा में चार प्रकार से शक्तिपात दीक्षा का विधान है। स्पर्श द्वारा, दृष्टि द्वारा, संकल्प व शब्द (मंत्र) दीक्षा द्वारा।

- गुरुदेव का मंत्र चेतन (Enlightened) मंत्र है, इसमें प्राण प्रतिष्ठा की हुई है। इस मंत्र में असंख्य ऋषियों की कमाई है।
- नाम जप ही चाबी (Key) है। इसको तेल की धार की तरह, हर समय (Round the Clock) सघन जपो।

गुरुदेव की दिव्य आवाज में संजीवनी मंत्र सुनने के लिए डायल करें–07533006009

सभी जाति-धर्मों के जिज्ञासु स्त्री-पुरुषों को स्नेह निमंत्रण।

मुख्यालय : **अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र**

होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राज.) 342 003 सम्पर्क : 0291-2753699, 9784742595

E-mail : avsk@the-comforter.com | Web : www.the-comforter.org

जोधपुर के लूणी तहसील के ग्रामीण इलाकों में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (जून 2019)

रायपुर (छत्तीसगढ़) – ग्रामीण इलाकों में गुरुदेव की तस्वीर से ध्यान कराया गया। (जून 2019)

शिमोगा (कर्नाटक) के साधकों द्वारा के.एल.ई. इंग्लिश मिडियम स्कूल, हावेरी व पुलिस ट्रेनिंग सेन्टर, सिग्गाव जिला–हावेरी में सिद्धयोग शिविरों का आयोजन। (21 जून 2019)

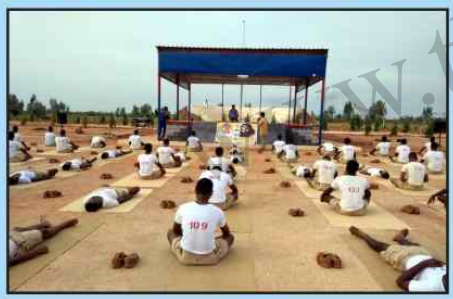

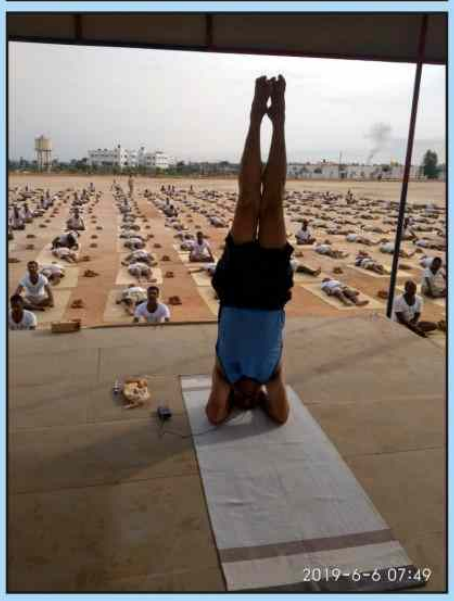

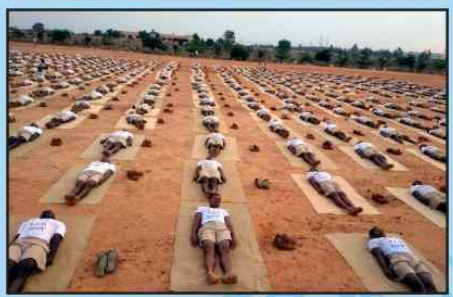

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर - शाखा बाड़मेर में महाप्रयाण दिवस पर गुरुदेव की पूजा-अर्चना के बाद सामूहिक ध्यान किया गया। (5 जून 2019)

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर - शाखा बायतु (बाड़मेर) में महाप्रयाण दिवस पर गुरुदेव की पूजा-अर्चना के बाद सामूहिक ध्यान किया गया। (5 जून 2019)

सरस्वती विद्या मन्दिर, भिंयाड़ (बाड़मेरा) में सिद्धयोग शिविर का आयोजन।
सैकड़ों विद्यार्थियों ने संजीवनी मंत्र जप के साथ सामूहिक ध्यान किया। (26 मई 2019)

R.N.I. NO. : RAJMUL/2008/26365 * POSTAL REGD. NO. JODHPUR/269/01.01.2017 & VALID UP TO 31.12.2019
DATE OF ISSUE : EVERY MONTH 27 & DISPATCH 28-29

वेटेनरी कॉलेज (RAJUVAS) बीकानेर में सिद्धयोग शिविर का आयोजन। (5 व 21 जून 2019)

अद्भुत सिद्धयोग - अद्भुत यौगिक क्रियाएँ

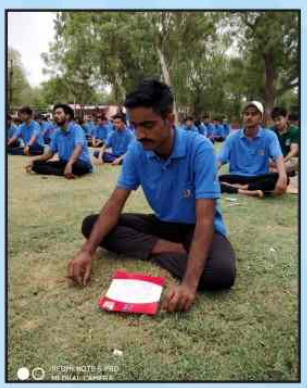

अवितरित प्रति निम्न पते पर लौटायें

Spiritual Science • स्पिरिचुअल साइंस

अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी

पोस्ट बॉक्स नं.41, जोधपुर (राज.) 342003 फोन: 0291-2753699, मो. : 9784742595

मुद्रित सामग्री (Printed Matter)

सेवा में,

श्रीमान्

स्वत्वाधिकारी : अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, जोधपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र कुमार चौधरी के लिए ताज प्रिण्टर्स, बोराणा हाऊस, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर से केवल मुद्रित एवं अध्यात्म विज्ञान सत्संग केन्द्र, होटल लेरिया के पास, चौपासनी, जोधपुर (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक – रामूराम चौधरी